महाकवि सुब्रह्मण्यं भारती
की राष्ट्रीय कविताएँ
(हिन्दी पद्यानुवाद)

महाकवि सुब्रह्मण्यं भारती की राष्ट्रीय कविताएँ

(हिन्दी पद्यानुवाद)

रूपान्तरकार
डॉ० एन० सुन्दरम्
डॉ० विश्वनाथ 'विश्वासी'

लोकभारती प्रकाशन
१५ ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद–१

लोकभारती प्रकाशन
१५-ए, महात्मा गाधी मार्ग
इलाहाबाद-१ द्वारा प्रकाशित

●

प्रथम सस्करण
१५-अगस्त, १९७१

●

सुपरफ़ाइन प्रिंटर्स,
१-सी, बाई का बाग, इलाहाबाद-३

मूल्य : ४ ००

जिनका प्रोत्साहन हमे
पग-पग पर मिलता
रहा है
उन्ही
आदरणीय गुरुवर डॉ० उदयनारायण तिवारी
को
सादर समर्पित

कुछ शब्द

हमारे देश में सांस्कृतिक एकता किसी राजनैतिक प्रभाव में न तो पनपी, न तो मुरझाई। हमारी सांस्कृतिक एकता एकरूपता मे भी कभी विश्वास नही करती रही है। प्रत्येक सृजनात्मक युग में भारत के विभिन्न तारो से राग समय-समय पर छेडे जाते रहे है, वे एक आन्तरिक समरसता क कारण एक दूसरे को और अधिक लय और ताल मे बाँधते रहे हैं। भक्ति-आन्दोलन से लेकर राष्ट्रीय आन्दोलन तक समस्त भारतीय भाषाओ के साहित्यो में हम इस प्रकार की समतालता का निदर्शन मिलता है। राजनैतिक सत्ता ने हमारी सास्कृतिक चेतना को बराबर तुच्छ समझा। इसी कारण मुगल सम्राटो के शासन को नकारने के लिए हमारे कवियो ने राम राज्य, वृन्दावन, गोलोक अनहद नाद सुख की योजना की और एक प्रदेश का राग दूसरे प्रदेश के राग के साथ अपने आप चेतना की विवशता से समताल होता रहा। उन्नीसवी शताब्दी के अन्त और बीसवी शताब्दी के प्रारभ में एक साथ जो पददलित भारतीय जनता के उद्धार के लिए भारत जननी की महाशक्ति की प्राणप्रतिष्ठा नाना प्रकार के मत्रो से की गई, उसके पीछे भी देश की एकता का वही प्रवहमान सत्य था। बकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, नर्मदा विपुलशकर और सुब्रह्मण्य भारती का आविर्भाव एक शृखला के रूप में हुआ। अपनी भाषा, अपने देश और अपनी सभावना का साक्षात्कार इन सभी ने किया, क्योकि ये सभी, आनेवाले युग के द्रष्टा थे। इन सबमें अपनी मातृभाषा के प्रति अगाढ़ अनुराग था। अग्रेजी की दासता के विरुद्ध तीव्र क्षोभ था और भारत की सभी भाषाओ के प्रति ममता थी। यह आकस्मिक सयोग नहीं है कि भारत जननी की कल्पना के साथ साथ समस्त भारतीय सतानो की एक भाषा की कल्पना इसी युग मे सम्भव हुई। केशवचन्द्र सेन, दयानन्द सरस्वती, शारदाचरण मित्तर और सुब्रह्मण्य भारती ने हिन्दी सीखी, हिन्दी में एकता लाने की क्षमता देखी और दूसरी ओर भारतेन्दु और उनके साथियो ने दूसरी भाषाओ से हिन्दी में अनुवाद प्रस्तुत किए।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद एकता के लिए हमारा एक सहज प्रयत्न राजनैतिक प्रयत्न से जुड गया। इससे सुविधाएँ तो बढी, पर तनाव भी साथ ही साथ बढने लगा। इस तनाव को कम करने मे निजी प्रयत्न ही अधिक कारगर होगे, ऐसा मेरा विश्वास है। ये प्रयत्न जितना ही स्वत: उद्भूत होगे, उतना ही इनका गहरा प्रभाव पडेगा। मुझसे जब सुब्रह्मण्य भारती के हिन्दी रूपान्तर पर दो शब्द लिखने को कहा गया तो मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि यह रूपान्तर तमिल भाषी और हिन्दी भाषी दो लेखको ने मिलकर किया है। यह प्रयत्न स्वतः उद्भूत है और इसमें हमारे राष्ट्रीय एकता का शिव निहित है।

सुब्रह्मण्य भारती का प्रादुर्भाव सन् १८८२ में हुआ और भारतेन्दु की ही भाँति वे अल्प अवस्था में ही मृत्यु को प्राप्त हुए। उनका निधन सन् १६२१ मे हुआ। भारतेन्दु को 'भारतेन्दु' विरुद्ध पंडितो की सभा मे आशीर्वाद के रूप मे मिला। यह विरुद सरकार द्वारा दी गई 'सितारे हिन्द' खिताब की तरह दासता का पुरस्कार नही था, यह था जनता का सम्मान। भारती को भी 'भारती' की उपाधि स्थानीय जनता द्वारा ११ वर्ष की अवस्था मे उनकी प्रतिभा की प्रखरता के उपलक्ष में दी गई। उन्होने अपने बाल्यकाल में ही अंग्रेजी शिक्षा के विरुद्ध विद्रोह किया और १८६८ से लेकर १६०२ तक काशी में रहकर उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा पाई। यहाँ रहकर उन्होने भारत की महान् शक्ति का साक्षात्कार किया। १६०४ से १६१२ तक उनका जीवन, विद्रोह को जगाने, भारत की शक्ति को आमंत्रित करने और विदेशी शासन से लोहा लेने में ही लगा रहा। इस मामले मे वे भारतेन्दु से अधिक क्रियाशील रहे। उनके कृतित्व का सबसे उर्वर काल १६०६ से लेकर १६१६ है। भारती की प्रतिभा, भक्ति, प्रेम और राष्ट्र जागरण के अनुभवों को मुखरित करने में एक तरह से समर्थ थी, पर उन्माद उनमें सबसे अधिक भारतीय जागरण का था।

गाधीयुग के प्रादुर्भाव के पूर्व ही उन्होंने कृषको और श्रमिको के राज्य की कल्पना की, भारत के गौरव की स्थापना की, स्वतंत्रता की जन-जन कल्याणी प्रतिभा को आकार दिया, भावी सुख शांति की आधार भित्ति तैयार की, अतीत के प्रत्याकलन से वर्तमान के दुख-दैन्य का बोध मिटाया, समस्त भारत की प्रादेशिक विशेषताओ को एक ध्वज स्तंभ के नीचे लाकर खड़ा कर दिया और भारत की प्रकृति को राष्ट्रीयता की भावना से एक साथ द्रवित कर दिया।

उस कवि की उपलब्धि का हमारे लिए आज एक ऐतिहासिक महत्व है। मैं

हृदय से प्रस्तुत रूपान्तर का स्वागत करता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इससे ऐसे विनम्र पर सहज प्रयत्नों की शृंखला की कड़ी बनेगी। इस प्रयत्न द्वारा हिन्दी भाषीगण भारती के कृतित्व से गौरवान्वित होंगे। मुझे आशा है कि हिन्दी से भी इसी प्रकार के रूपान्तर तमिल में प्रस्तुत किए जायँग।

मल्हलादपुर, 'सूरत सदन' —विद्यानिवास मिश्र
गोरखपुर (उ० प्र०)

अनुक्रम

•

सुब्रह्मण्य भारती एक परिचय

महाकवि सुब्रह्मण्य भारती का जन्म सन् १८८२ में सुदूर दक्षिण के तिरुनेलवेली के शिवपेरी नामक गांव म हुआ था। उनके पिता का नाम चिन्नस्वामी अय्यर और माता का नाम लक्ष्मी अम्माल था। प्रगाढ़ तमिल ज्ञान, गणित की अपूव योग्यता तथा सूक्ष्म मेधा शक्ति से प्रभावित होकर एट्टयपुरम के महाराजा ने चिन्नस्वामी अय्यर को अपने दरबार में रख लिया था। राजघराने से सम्पर्क के कारण कवि सुब्रह्मण्य का भी दरबार में आना-जाना होता था।

भारती के जन्म देने के पांच साल बाद ही माता लक्ष्मी अम्माल का देहान्त हो गया था और उनके देहान्त के बाद चिन्नस्वामी अय्यर ने दूसरा विवाह भी कर लिया था। सौभाग्य की बात थी कि विमाता के कारण भारती को कोई कष्ट नही हुआ। अपनी बहन भागीरथी के साथ भारती को दूसरी माता से वह प्यार मिला, जो पहली माता से भी प्राप्त नही हुआ था।

चिन्नस्वामी भारती के शारीरिक विकास का ध्यान न करते हुए मौलिक विकास पर ही बल देते थे। इसका सकेत भारती की 'आत्मकथा' से मिलता है। एकात इन्हें अधिक प्रिय था। अकेले हो घर से बाहर बगीचो, तालाबो आदि के किनारे बैठे देर तक प्रकृति-सौन्दर्य को निहारा करते थे। इसका अप्रत्यक्ष प्रभाव भारती के अत करण पर बालकपन से ही पड़ने लगा था। यही कारण है कि उनकी रचनाओ में आगे चलकर प्रकृति के प्रति एक कुतूहल और आकर्षण के दर्शन हुए। अभिजात ब्राह्मण-कुल मे जन्म लेने के कारण उत्तम सस्कार के साथ-साथ, घर में आनेवाले विद्वतजनो का सम्पर्क भी भारती को मिलता रहा।

बाल्यकाल से ही पिता के साथ दरबार में जाते, और स्वरचित छोटी-छोटी कविताओ को सुनाने के साथ ही यह घोषणा भी करते थे कि "उनके कारण यह अभिशाप मिटकर रहगा कि तमिलनाडु में आधुनिक काल में तमिल का कोई प्रख्यात कवि नही हुआ।" इन सब बातो से महाराजा बहुत प्रसन्न होते थे और भारती के साथ ही उनके पिता को भी प्रोत्साहन दिया करते थे। कवित्व शक्ति से प्रभावित होकर ही राजदरबार के विद्वानो ने सुब्रह्मण्य को भारती' की उपाधि से विभूषित किया था। इसके पूर्व वे सुब्बय्या के नाम से पुकारे जाते थे।

प्रारम्भ स ही भारती की भावुकता स्पष्ट होने लगी थी। अध्ययन काल में भी सब कुछ भूलकर मित्रो के बीच नाचने-गाने लगते थे। अग्रेजी की उच्च

शिक्षा पाने के लिए, पिता के आदेश से भारती तिरुनेलवेली गये, पर अंग्रेजी में अध्ययन में कभी उनका मन नहीं रमा। फिर भी पिताजी की आज्ञा का पालन करना ही था। अतएव कुछ दिनों के अध्ययन काल में ही भारती ने अच्छी अंग्रेजी सीख ली। सच तो यह है कि अंग्रेजी से उन्हें हार्दिक घृणा थी। उपरोक्त घटना का उल्लेख करते हुए अपनी आत्मकथा में भारती एक स्थान पर लिखते हैं, "गुरम हृदय पिताजी ने मेरे समुचित विकास और उच्च शिक्षा के उद्देश्य को ध्यान में रखकर मुझे यहाँ भेजा। परिणामस्वरूप पिताजी के हजारों रुपयों का अपव्यय हुआ, पर मुझे लाभ एक भी नहीं हुआ। बदले में मुझे हजारों बुराइयों की एक ढेरी मिली, इसे मैं चालीस हजार मन्दिरों में जाकर कह सकता हूँ।"

पिता व माता की इच्छा के कारण बारह वर्ष की अल्पायु में ही भारती का विवाह चेल्लम्मा नामक कन्या से सम्पन्न हो गया था। चेल्लम्मा उस समय बहुत ही छोटी थी। विवाह संस्कार को भारती ने खेल ही समझा था। वे बार-बार कहते थे कि अगर वशिष्ठ, राम और वल्लुवर की धर्मपत्नियाँ जैसी पत्नी किसी को मिलें तो वैवाहिक जीवन उचित है, अन्यथा ब्रह्मचर्य ही अच्छा है। परम सौभाग्य की बात थी, उनकी धर्मपत्नी उनके मनोनुकूल ही थी। विवाह-मंडप में ही पत्नी के प्रति एक कविता सुनाकर भारती ने अपने 'आशुकवि' होने का परिचय दे दिया था। घर पर भी पत्नी को सम्बोधित करते हुए प्रेम गीत गाते रहते थे। दम्पति की छोटी अवस्था के कारण इन गीतों का कोई प्रभाव या प्रतिकार तो सम्भव नहीं था, फिर भी चेल्लम्मा इन गीतों को सुनकर आनन्दविभोर हो जाया करती थी।

विवाह के दो वर्षों के बाद ही भारती के ऊपर विपदाओं की प्रत्यक्ष छाया अपना प्रभाव जमाने लगी। एकमात्र सहायक पिता ने १४ वर्ष के अत्यल्प बालक के कंधे पर गृहस्थी का सारा बोझ डालकर स्वयं परलोक की राह ले ली। राज-दरबार से सम्पर्क टूटते ही दरिद्रता घर में नग्न नृत्य करने लगी। इसके पूर्व ऐसे कष्टपूर्ण जीवन से होकर भारती का परिवार कभी नहीं गुजरा था। यही कारण था कि भारती उन दिनों अपने जीवन से ऊबकर, जन्म पाना ही व्यर्थ समझने लगे थे। 'धन की महिमा' नामक कविता में भारती ने उन दिनों का स्पष्ट संकेत किया है। पिता के आकस्मिक निधन से भारती को एक वर्ष बाद अपनी फूफी के पास बनारस चला जाना पड़ा। फूफा ने भारती की प्रतिभा को देखकर उनके लिए हिन्दी और संस्कृत के अध्ययन की व्यवस्था कर दी थी। इन दोनों विषयों के अध्ययन के साथ ही प्रवेश परीक्षा में प्रथम उत्तीर्ण होकर भारती ने अद्वितीय बुद्धिमत्ता का परिचय दिया था।

फूफा कट्टर सनातन धर्मी थे। एक दिन की घटना है—भारती ने अपनी

शिखा को दूसरे ढग से सजाकर काट लिया। इसे देखकर फूफा के क्रोध का ठिकाना न रहा। उन्होंने प्रतिज्ञा की कि इस धर्मविमुख के साथ वे कभी भोजन नही करेंगे। इस घटना के कुछ ही दिन बाद एक और घटना घटी। फूफा के निर्देशन में ही चलनेवाले शिवमन्दिर का पुजारी, भजन के समय उपस्थित नही हो सका। उसके अभाव मे पूजा के विधि-विधान में बाधा पडते देखकर फूफा ने रुष्ट स्वर में ही भारती को कोई शिव वन्दना सुनाने की आज्ञा दी। फूफी की भी आज्ञा पाकर भारती ने जब सुमधुर कठ से 'तिरुवेम्पावै' के गीत गाये तो उपस्थित जन-समुदाय मन्त्रमुग्ध हो गया। यहाँ तक कि बहुत दिनों से रुष्ट फूफा ने पूजा के उपरान्त आत्मविभोर होकर भारती को गले लगा लिया और कहने लगे "तुम ही सच्चे शिव भक्त हो। तुम्हारे हृदय में ही शिव-कांति प्रज्ज्वलित हो सकती है।" उस दिन से फूफा भतीजे एक साथ बैठकर भोजन करने लगे।

बचपन से ही भारती अच्छे वस्त्र पहनने और ठाट-बाट से रहने के पक्षपाती थे। दरिद्रता के प्रदर्शन से उन्हें चिढ थी। अपने वस्त्रो के साथ वे सैनिक के चिन्ह भी धारण करते थे। पूछने पर उत्तेजना के साथ उत्तर देते थे कि वे ही भारत रानी के सच्चे प्रतिनिधि सिपाही हैं।

काशी में रहते समय भारती बहुधा नौकारूढ होकर गगा की प्राकृतिक छटा देखा करते थे। भारती के अन्तर्मन पर इसका भी गहरा प्रभाव पडा था। काशीवास का इनके बाद के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। इसने ही उनको व्यापक दृष्टि दी थी, अन्यथा भारती संकुचित दायरे में ही सीमित रहकर आंचलिक बन जाते।

एक वर्ष काशी मे बिताने के उपरान्त सन् १९०२ में भारती पुन अपने गाँव एट्टयपुरम लौट गये थे। तमिल काव्य एव शास्त्रादि के अध्ययन के लिए तथा समाचार पत्रों की विवेचना के लिए एट्टयपुरम के महाराजा ने पिता की तरह भारती को भी दरबार में रख लिया। यहाँ रहते हुए भारती ने आगल भाषा के प्रसिद्ध कवि शेक्सपियर, शेली, बायरन एव कीट्स का गहरा अध्ययन किया था। आगल भाषा के प्रति अधिक रुचि न होने पर भी शेली से प्रभावित होकर उन्होंने अपने को 'शैल्लिदासन' के नाम से लिखना प्रारंभ कर दिया। ऐसा उन्होंने उपरोक्त अंग्रेजी कवियों के भावो को जनता तक लाने के लिए ही किया था। इस उपनाम से ही कवियों की कविताओं के साराश पत्र-पत्रिकाओं में लिखते थे।

भारती को अध्ययन के प्रति विशेषकर प्राचीन काव्य के अध्ययन में अत्यधिक रुचि थी। इस सबध में एक घटना उल्लेखनीय है। क्रिस्मस तथा प्रथम जनवरी आदि के त्योहार मनाने के लिए एट्टयपुरम के राजा अपने मित्रो के साथ एक बार मद्रास आये। उनके साथ भारती भी थे। घर से चलते समय भारती की पत्नी ने

राजा द्वारा दिये गये पुरस्कार से अच्छी साडियाँ और कपड़े लाने की प्रार्थना की थी । मद्रास से लौटते समय भारती अपने साथ दो गाड़ी सामान भरकर लाये। दूर से देखकर चेल्लमा अत्यधिक आनंदित हुई । पास आने पर जो देखा तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा । दोनो गाडियाँ प्राचीन तमिल साहित्य से सबधित पुस्तको से भरी थी । भारती ने पत्नी के कुछ न कहने पर भी उसकी आंतरिक वेदना को भाँपकर कहा, "मुझे खेद है कि तेरे लिए केवल एक ही साडी ला सका । ये साहित्यिक कृतियाँ ही वास्तविक स्थायी सम्पत्ति है, शेष सब क्षणभगुर हैं ।" आतरिक वेदना को दबाते हुए चेल्लम्मा ने भी इस कथन का समर्थन किया, क्योकि पति की प्रसन्नता ही पत्नी की प्रसन्नता थी ।

भारती जातिभेद प्रथा के घोर विरोधी थे । एक बार मुहल्ले में जातिभेद को लेकर उपद्रव हो जाने पर एक बीच-बचाव करनेवाले को छुरे से घयाल होकर जान गँवानी पडी । इस घटना से दुखी होकर भारती उस दिन से ही जाति-भेद की तीव्र आलोचना करते हुए कविताएँ करने लगे ।

जिन दिनो अंग्रेजी सरकार बगाल के बँटवारे पर दृढ सकल्प थी, उन दिनो बग-भग आन्दोलन को लेकर काफी अशाति हुई थी । भारती ने इस आन्दोलन मे खुलकर भाग लिया था । तमिल की एक पत्रिका 'विडुतलै' (स्वतत्रता) में वे उन दिनो अंग्रेज सरकार के विरुद्ध बराबर लिखते रहे । अपने विचारो को वे व्यक्त करने के लिए स्वय एक पत्रिका प्रकाशित करना चाहते थे । इस रुचि में आर्थिक कठिनाइयाँ उनका मार्ग अवरुद्ध कर रही थी । राष्ट्रप्रेमी तिरुमलै अय्यगार, जो उन दिनो एक अंग्रेजी पत्रिका का सम्पादन कर रहे थे, एक तमिल पत्रिका भी प्रकाशित करना चाहते थे । इसके सम्पादन के लिए एक वरिष्ठ व्यक्तित्व की अपेक्षा थी । भारती की मौलिक सूझ और कवित्व से प्रभावित होकर तिरुमलै अय्यगार ने उस पत्रिका के सम्पादन का कार्य-भार भारती को ही सौंप दिया । सन् १९०७ मे सर्वप्रथम यह पत्रिका 'इण्डिया' के नाम से प्रकाशित हुई । प्रारभ से अन्त तक इस पत्रिका के माध्यम से स्वतत्रता सबधी भावावेशयुक्त आग उगलनेवाली कविताओ के द्वारा भारती जन-जागृति करते रहे ।

इसके बाद तीन ऐतिहासिक घटनाएँ घटी । प्रथमत लाला लाजपतराय को क्रातिकारी घोषित करके सरकार ने उन्हें देशनिकाला दिया । दूसरे गरम दल और नरम दल मे आपसी मतभेद हो जाने के कारण 'सूरत कांग्रेस' बिना किसी निर्णय के सघर्षमय वातावरण में समाप्त हो गया । तीसरी घटना यह हुई कि तमिलनाडु के देशभक्त व० उ० चिदबरम् पिल्ले को आंग्ल सरकार की ओर से भयकर कारावास की सजा दे दी गई । इन घटनाओ का भारती के मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव पडा । बगाल के क्रातिकारी नेता श्री विपिनचन्द्र पाल और

सुरेन्द्रनाथ आर्या आदि को मद्रास में आमंत्रित करके भारती विशाल जनसभाएँ करने लगे। समुद्र के किनारे आयोजित इन सभाओं में हजारों की संख्या में जनता भारती के ओजस्वी भाषण सुनने के लिए लालायित रहती थी।

सूरत कांग्रेस से लौटने पर भारती ने 'मद्रास जनसंघ' की स्थापना की। इस मद्रास जनसंघ से तिलक का गहरा संबंध था। भारती राजनैतिक क्षेत्र में बाल गंगाधर तिलक को ही अपना गुरु मानते थे।

सुब्रह्मण्य भारती आवश्यकता से अधिक भावुक थे। तिलक की पार्टी के राष्ट्रीयता-दिवस मनाने के संकल्प को, मात्र जुलूस का नेतृत्व करनेवाले व्यक्ति के अभाव में विनष्ट होते देख, उन्होंने अपने का कमाण्डर जैसा बनाकर नेतृत्व के लिए तैयार किया। सरकार की आज्ञा का उल्लंघन करने के फलस्वरूप उनके ऊपर गिरफ्तारी का वारण्ट कर दिया गया।

स्मरण रहे कि उन दिनों व० उ० चिदंबरम् पिल्लै ने जिस स्वदेशी स्टीम नेविगेशन कम्पनी की स्थापना की थी, उसे सफल बनाने के लिए आर्थिक सहायता अपेक्षित थी। स्वदेशी कम्पनियों की स्थापना का यह प्रथम प्रयास था। तिलक की सहायता से भारती ने इस यज्ञ में अभूतपूर्व योग दिया था।

भारती का पुदुवै (पाण्डिच्चेरी) प्रवास

'इण्डिया' पत्रिका के प्रचार और प्रभाव को देखकर सरकार घबरा गई थी। यह पत्रिका सरकार के लिए सिरदर्द का कारण बन गई थी। सरकार किसी प्रकार से इसे समाप्त करना चाहती थी। फलस्वरूप एक अधिवेशन को सरकार द्वारा अवैध घोषित करके उसमें भाग लेनेवाले वीर चिदंबरम् पिल्लै, सुब्रह्मण्य शिवा प्रभृति कई लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया। उस समय का कारावास बहुत भयंकर हुआ करता था। पत्थर तोड़ने से लेकर चक्की के बैल के काम कैदियों से लिये जाते थे। यातना की प्रचंडता 'इण्डिया' के प्रकाशन और साहित्यिक सर्जना में बाधक हो सकती है, यह सोचकर भारती अपने किसी मित्र के पास पुदुवै—फ्रेंच कालोनी—चले गये। यहाँ रहते हुए गुप्त रीति से 'इण्डिया' का प्रकाशन पुनः प्रारंभ हुआ। पुदुवै में जिस मित्र के यहाँ भारती शरणार्थी के रूप में रहते थे, उस मित्र ने दूसरों की धमकी में आकर भारती से अपना घर खाली कर देने के लिए निवेदन किया। ऐसी विषम परिस्थिति में भी पुलिस के आतंक, आर्थिक कठिनाई और 'इण्डिया' के दायित्व का बोझ लिये भारती एक के बाद एक आने-वाली यातनाओं का सामना दृढ़ संकल्प से करते रहे। इस परेशानी का संकेत भारतीकृत 'कोयल' नामक खंड-काव्य में मिलता है। इसमें एक स्थान पर भारती लिखते हैं "मुझे उस समय जितनी यातना मिली, उतनी करघे में इधर-

उपर बार-बार आने-जानेवाली मक्खी को भी न मिलती होगी।" एक अन्य स्थान पर वे लिखते हैं—"मेरे ऊपर कष्ट वैसे ही आते रहे, जिस प्रकार धारा-प्रवाह चल रहे संगीत में एक के बाद एक ताल आते-जाते हैं।"

निराधार जीवन के क्षणों में ही भारती की भेंट एक अन्य मित्र से हुई। इस मित्र ने स्वयं आर्थिक कठिनाई में होते हुए भी यथाशक्ति भारती की आर्थिक कठिनाई को दूर करने में सहायता की थी। उसने पुदुवै में अनेक मित्रों से परिचय कराया, जो बाद में भारती के लिए सहायक सिद्ध हुए। उक्त मित्र का नाम था 'कुवलै कृष्णमाचारी'। सम्भवतः इस मित्र के प्रभाव में आकर उसके प्रति ही भारती ने अपनी प्रसिद्ध कविता 'कान्ह मेरा सेवक' (कण्णन् एन् सेवकन्) लिखी। कहना न होगा कि मात्र उस मित्र की सहायता से ही 'इण्डिया' का प्रकाशन कुछ दिन होता रहा। अपने पुदुवै के प्रवास में ही भारती एक पुत्री के पिता बने, उनकी इच्छा के अनुसार ही पुत्री का नाम शकुन्तला रखा गया। सन् १९१० में बाबू अरविन्द घोष पर स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने और जनता को सरकार के विरुद्ध भड़काने का आरोप लगाकर गिरफ्तारी का वारण्ट कर दिया गया। पुलिस की दृष्टि से बचकर घोष भी पुदुवै चले आये। भारती के लिए यह एक सुयोग ही था। दोनों विद्रोही नित्य प्रति मिलते और कई घंटों तक राजनैतिक चर्चाएँ करते रहते थे। भयंकर क्रान्तिकारी व० वे० सु० अय्यर भी किसी प्रकार बचकर पुदुवै आ गये थे। इन सब लोगों का भारती के राजनैतिक जीवन पर गहरा प्रभाव है। सबकी सहायता होते हुए भी भारत सरकार द्वारा 'इण्डिया' के ऊपर अपनी सीमा में आने पर प्रतिबन्ध होने से तथा किंचित् फ्रेंच सरकार की कठिनाइयों के कारण भी 'इण्डिया' का सम्पादन १९१० में बन्द कर देना पड़ा। यही वह मनहूस घड़ी थी जब स्वतन्त्रता आन्दोलन को बल देनेवाली लगभग सभी पत्रिकाएँ, 'दैनिक विजया', 'साप्ताहिक सूर्योदय', अंग्रेजी साप्ताहिक 'बाल भारती', मासिक 'कर्मयोगी' आदि सरकार द्वारा प्रतिबन्ध लग जाने के कारण बन्द हो गई। उल्लेखनीय है कि इन सब पत्रिकाओं से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में भारती का सर्वदा सबंध रहा। भारती उन दिनों अंग्रेजी तमिल की एक व्यंग्य पत्रिका प्रकाशित करने की योजना बना रहे थे। समय के अनुकूल न होने के कारण यह भी सम्भव नहीं हो सका। सारे प्रयत्नों से निराश होकर भारती अरविंद घोष के साथ वेद, नीतिग्रंथ एवं आगमशास्त्र का गंभीर अध्ययन करने लगे। अपने आत्मचरित्र से संबंधित कविताओं का 'स्वप्न' नामक एक संग्रह इन दिनों में ही भारती ने प्रकाशित कराया।

पुदुवै में रहते हुए उनके जीवन की एक और विशिष्ट घटना घटी थी। भारती की अनुपस्थिति में ही पुलिस ने आकर उनके लिखे हुए ग्रंथों की पाडु-

लिपियाँ एव अन्य आवश्यक कागज हड़प लिये। घर आकर भारती ने यह दृश्य देखा तो उनका हृदय इस अनाचार की आग मे जलने लगा। लाचारी थी, क्या किया जा सकता था। जीवन में पहली बार इस वेदना से ही ऊबकर भारती दुखी और निराश हुए थे। वास्तव में एक साहित्यिक व्यक्ति के लिए सबसे प्यारी उसकी रचनाएँ ही हुआ करती हैं।

गुप्तचरो का जाल बिछा होने के कारण भारती के मित्र उनसे दिन में मिल नही पाते थे। काफी रात गये वे लोग जब भारती के घर आते, तो विविध कठिनाइयो के होते हुए भी भारती उन्हें स्वरचित कविताएँ सुनाने से नही चूकते थे। मित्रो के आतिथ्य के लिए भारती अपनी पत्नी चेल्लम्मा को, जो पुत्री पैदा होने के बाद स्वय पुदुवै चली आयी थी, तग किया करते थे। घर म पैसा और सामग्री का सदा ही अभाव रहता था। एक बार की घटना है कि पत्नी के यह कहने पर कि घर में सामग्री नही है, भारती बहुत उत्तेजित हो गए थे और चिल्लाकर कहने लगे 'आगे से मैं 'इस नही' 'शब्द को ही ससार में नहीं रहने दूँगा।' पत्नी को उन्होने सिखाया 'अगर कोई सामान नही है तो सबके सामने मेरी बेइज्जती मत किया करो। साकेतिक शब्द 'नकार' और 'हकार' का प्रयोग करो। भारती उग्र होने के साथ ही अत्यन्त उदार और भोले स्वभाव के थे। एक बार की घटना है कि पुलिस के दलाल ने भारती से आकर कहा कि उनके ऊपर से वारण्ट उठा लिया गया है। आनन्दातिरेक में निश्छल हृदय भारती, पत्नी पुत्री आदि को पुदुवै में ही छोडकर मद्रास की ओर उसके साथ चल पडे। उधर से आते हुए किसी मित्र के द्वारा यह ज्ञात होने पर कि यह पुलिस का षड्यन्त्र है, भारती को अपनी भूल पर लज्जा हुई और मित्र के प्रयत्न से पुन पुदुवै लौट सके। दो-तीन दिन के बाद वह गद्दार मित्र भारती के यहाँ आया। भारती उससे प्रेम के साथ मिले। इतने प्रेम-पूर्वक मिलते देखकर भारती की मित्र-मण्डली एव उनकी धर्मपत्नी भी अत्यन्त रुष्ट हुई। बडे सीधे ढग से उन्होंने सबको समझाया, साथ ही एक कविता लिख डाली, जिसका भाव है, 'हे मन, तू शत्रुओ पर भी दया रख।'

भारती की दानशीलता के भी अनेक उदाहरण हैं। कहते हैं, एक बार भारती कही से अच्छे कपडे खरीद लाए। उसे उन्होने उस दूकान पर सिलाने के लिए दिया, जहाँ उनके अन्य मित्रों के भी कपडे सिले जा रहे थे। दर्जी से भारती ने शर्त रखी कि यदि वह हमारे कपडे सबसे अधिक अच्छा सिले तो उसे उचित पारिश्रमिक से अधिक दिया जायगा। परिणाम कुछ दूसरा ही हुआ। भारती के कपडे सबसे अधिक ढीले-ढाले भद्दे ढग से तैयार किए गए। आश्चर्य तो यह है कि इतना होने पर भी उस दर्जी को सबसे अधिक पारिश्रमिक दिया। उसे पहनकर जब घूमने निकले, तो भद्दी सिलाई को देखकर लोग उनका परिहास करने लगे।

इन सबको सहन करते हुए कुछ दूर ही गये होंगे कि उन्हें एक व्यक्ति नंगे बदन भीख माँगता दिखायी पड़ा। बिना कुछ सोचे-विचारे कुरता और टोपी उसे पहनाकर घर वापस आ गए।

भावावेश के क्षणों में किए गए भारती के कार्य कभी-कभी पागलपन की सीमा तक पहुँच जाते थे। एक बार की घटना है कि व एक गदहे के बच्चे को कंधे पर लेकर घूमने निकले और उसे बार-बार चूमने लगे। जो भी पूछता तो कहते 'अगर मैं पागल हूँ तो शिवजी भी पागल थे, जो सुअर बनकर सुअर के बच्चे को दुग्धपान करा चुके हैं।'

सन् १९१० से १९१४ तक का जीवन अत्यन्त परिश्रमसिद्ध होते हुए भी भारती के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। इस समय ही इनके 'कायल' (कुयिल), 'पांचाली शपतम्', 'कान्हा गीत' (कण्णन पाट्टु) आदि प्रसिद्ध काव्य संग्रह प्रकाशित हुए। 'स्वदेशमित्रन' के सम्पादक की प्रार्थना पर भारती ने अविकल रूप से लेख, कविता, कहानी आदि लिखना प्रारंभ किया। इनके पारिश्रमिक से उनकी आर्थिक स्थिति भी सुधरने लगी। स्वतन्त्रता आन्दोलन के पचास वर्षों के इतिहास का भारती ने धारावाहिक रूप से उस समय ही 'स्वदेशमित्रन' में लिखा था।

प्रथम महायुद्ध प्रारंभ हो गया था। पुदुवै के जीवन से ऊबकर भारती अपनी पत्नी के साथ मद्रास लौट आये। यहाँ आते ही अंग्रेज सरकार ने उन्हें कैद कर लिया। ३६ दिन कारावास भुगतने के अनन्तर निर्दोष साबित होने के कारण वे रिहा कर दिये गए।

जेल से छूटने के बाद भारती अपने गाँव 'कडयम' में सपत्नीक निवास करने लगे। यहाँ भी अपने भावावेश से उन्हें मुक्ति नहीं मिली। घूमते समय एक बार कुछ लड़कों को नीम और इमली के फल खाते देखकर उन्हें आश्चर्य हुआ। यह जानकर कि उनके पास कुछ और खाने को नहीं है, भारती रो पड़े। आवेश में स्वयं भी इमली और नीम के फल खाने लगे। इसी तरह की एक और घटना उल्लेखनीय है। लोगों से अपनी आर्थिक स्थिति पर निन्दा सुनकर वे अत्यन्त आवेश में आ गए और स्वदेशमित्रन से पारिश्रमिक के रूप में प्राप्त सौ रुपये को हवा में उड़ाते हुए चिल्लाने लगे 'कौन कहता है कि मैं गरीब हूँ, मेरे पास कुछ नहीं है, लूटो जिसे जितना लूटना हो।' उपस्थित भीड़ में से लोग एक-एक करके रुपया लेते हुए भारती की प्रशंसा करते हुए चले गये।

कडयम में रहते हुए सन् १९२० में ही भारती, रवीन्द्रनाथ ठाकुर के साथ ही नोबेल पुरस्कार में भाग लेना चाहते थे। पर कुछ कठिनाइयों के कारण यह संभव नहीं हो सका।

कुछ दिनो के बाद १६२० में ही ये एट्टयपुरम आ गये। एक दिन पत्नी के लाख मना करने पर भी बलपूर्वक उनके साथ हाथ में हाथ डालकर चलने लगे। सड़क पर आतो-जाती भीड के लिए यह नितात नया दृश्य था। कितने ही लोगो ने अपनी आँखें बद कर ली। कितने ही 'छी छी' करने लगे। इसका भारती के मस्तिष्क पर उग्र प्रभाव हुआ। घर लौटकर तत्कालीन समाज के सकीर्ण मनोभावो से दुखित होकर नारी-पुरुष की समानता से सम्बन्धित गीत लिखने लगे।

कहा जाता है कि एक बार वे तिरुवनतपुरम में अजायबघर देखने गये। विभिन्न प्रकार के पशुओ को देखते हुए जब वे सिंह के समक्ष पहुँचे, तो अकड़कर खड़े हो गए और कहने लगे 'सिंह राजा ! देखो तुम्हारे सामने कविराजा खड़ा है। तुम अपने समान शारीरिक बल इसे दो। अदर कुछ सोचकर बाहर दूसरा न कर सकने के अपने स्वभाव को भी अगर तुम दे सको तो अच्छा हो।' ऐसी ही चमत्कारी घटनाएँ भारती के पग-पग के जीवन में भरी पडी है। सन् १६१६ के मार्च में राजाजी के घर पर गाधीजी से भारती की भेंट हो चुकी थी। उन दिनो वे तिरुवल्लिक्केणी के मदिर नित्यप्रति जाते थे और वहाँ के हाथी को गन्ना, नारियल आदि खिलाते थे। एक दिन की घटना है कि हाथी मतवाला हो गया था। लोगो द्वारा उसके पागल होने की बात जानकर और लाख मना करने पर भी भारती उसे फल खिलाने के लिए चले गये। परिणामस्वरूप हाथी के धक्का मार देने के कारण उनकी हड्डियाँ टूट गई। पूर्वपरिचित मित्र 'कुवलै' वहाँ अचानक आ गये। मूर्च्छित अवस्था में उन्हे चिकित्सालय ले गये। चिकित्सालय में रहते समय ही 'अली बन्धु' मद्रास आये थे। उनके साथ गाधीजी भी थे। भारती को देखने के लिए ये लोग उनके यहाँ गये। भारती उनसे मिलकर अत्यधिक आनदित हुए।

चोट लगभग ठीक हो गई थी, किन्तु शनै-शनै बढ़ती कमजोरी ने उन्हे क्षीण-काय कर दिया। कमजोरी के कारण ही पेचिश की बीमारी बढती गयी और इसके ही असाध्य हो जाने के कारण सन् १६२२ में १२ सितम्बर की अर्धरात्रि मे भारत के उस अनन्य सेवक महाकवि भारती की आत्मा, अनेक नेताओ, मित्रो, संबंधियो, पत्नी तथा पुत्री आदि को शोकाकुल अवस्था में तडपती छोडकर महा-प्रयाण कर गयी। भारती का भौतिक शरीर भारत की धरती से उठ गया, किन्तु उनका जीवन और उनकी भाव-सबल रचनाएँ सदा सर्वदा, देशभक्तो, साहित्य-कारो एव विचारको के लिए मार्गदर्शन का कार्य करती रहेंगी।

भारती की साहित्यिक साधना

सुब्रह्मण्य भारती बहुमुखी प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्ति थे। समाज और वातावरण की कोई भी अच्छाई व बुराई उनके भावुक हृदय पर सीधे प्रभाव डालती थी।

कोई भी सवेदनशील प्रसग उनकी लेखनी का सहारा पा सकता था। यही कारण है कि उनकी रचनाओं में हमें विविध दृष्टिकोण देखने को मिलते हैं। साधारण रूप से उनकी रचनाएँ निम्नलिखित वर्ग में विभाजित की जा सकती हैं—खण्ड काव्य, विविध मुक्तक रचनाएँ, गद्यगीत, विविध निबंध एवं कहानियाँ।

भारती के खण्ड-काव्यों में 'पांचाली शपथम्', 'कान्हा के गीत' (कण्णन पाट्टु) और 'कोयल के गीत' (कुयिल पाट्टु) का ही नाम लिया जाना चाहिए। इनके अतिरिक्त भी कुछ ऐसी रचनाएँ हैं, जो कलेवर की दृष्टि से तो खण्ड-काव्य के समान ही हैं, पर उन्हें लंबी कविताएँ कहना ही समीचीन होगा।

महाभारत की द्रौपदी शपथ की कथा को आधार बनाकर भारती ने 'पाचाली शपथम्' की रचना की है। पाँच वर्गों में विभाजित इस भावप्रधान रचना में उन्होंने नारी के वास्तविक स्वरूप का उद्घाटन करते हुए तत्कालीन सामाजिक सकेतों के सगठन को आधुनिक सामाजिक परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में रखकर परखने का सफल प्रयास किया है। इस काव्य में द्रौपदी के माध्यम से भारत देश की परिस्थितियों का चित्रण प्रस्तुत है। द्रौपदी अपना केशबंधन तब करती है जब दु शासन का अंत होता है। यह धारणा प्रकारान्तर से यह भी सूचित करती है कि भारत देश तभी स्मरणीय हो सकेगा जब इसके परस्पर विभेदक तत्व, छल, पाखण्ड, अंधविश्वास आदि समाप्त हो जाएँगे, दासता समाप्त हो जाएगी। स्वतन्त्रता के दर्शन होंगे अर्थात् कुरीतियों का दु शासन जब समाप्त होगा, तभी भारत देशरूपी द्रौपदी आनन्द लाभ करेगी।

'कान्हा के गीत' का तमिल वाङ्मय मे अद्वितीय स्थान है। इसकी रचना प्राचीन तमिल काव्य शैली के आधार पर हुई है। कवि ने अपनी कल्पना में कृष्ण के भिन्न-भिन्न रूप देखे, वे कहीं नायक है, कहीं नायिका। कहीं माता-पिता हैं' कहीं पुत्र। कहीं गुरु हैं तो कहीं शिष्य और कहीं सखा। प्राचीन 'तमिल शैली का आधार होने पर भी इस काव्य-रचना मे आधुनिक, वैज्ञानिक और आध्यात्मिक विचारों का सुन्दर समन्वय द्रष्टव्य है। राधारमण कृष्ण और गीता का उपदेश देनेवाले कृष्ण का मिश्रित व्यक्तित्व ही भारती को प्रभावित कर सका है।

कोयल गीत भारती की विशुद्ध मौलिक कल्पना है। एक स्वप्न के माध्यम से कवि ने इस रचना में एक मोहक प्रेम कथा का वर्णन किया है। मोह, माया, ममता का सबध जन्म जन्मान्तरों से होता है। ये आत्मा के आध्यात्मिक उत्थान में सर्वथा बाधक होते हैं। इनके ही बंधन में पडी आत्मा मुक्ति के लिए छटपटा रही है। इसी आध्यात्मिक सकेत को आधार बनाकर कोयल की आध्यात्मिक प्रेम कहानी कही गई है। इस रचना में आद्यन्त शृङ्गारिकता देखी जा सकती है।

बीच-बीच मे शिष्ट हास्य का पुट देना भी भारती नही भूलते। शृङ्गार और हास्य का इतना पुष्ट और शिष्ट समन्वय तमिल साहित्य मे अन्यत्र दुर्लभ ही है।

मुक्तक रचनाओं में 'भारती छियासठ' कवि की एक विचारधारा की छियासठ कविताओ का संग्रह है। ये सभी कविताएँ आध्यात्मिकता का पक्ष बाँधकर अपना जयनाद करती हैं। ये रचनाएँ भारती द्वारा प्रकाशित व सम्पादित पत्रिकाओ में धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुई थी।

भारती की दीर्घाकार कविताओ मे 'मुरसु' (नगाड़ा), 'पाप्पा पाट्टु' (बच्चो के गीत), 'नयी आत्तिच्चूडी (अकारादि क्रम से लिखित उपदेशात्मक रचना), विनायक मणिमालै (गणेश स्मृति) आदि उल्लेखनीय हैं।

इनके अतिरिक्त भारती ने लगभग ४०० फुटकल गीत लिखे हैं। इन गीतो को भी विभिन्न भावनाओ के आधार पर कई वर्गों में विभाजित किया जा सकता है. राष्ट्रीय, सामाजिक और दार्शनिक रचनाओं के साथ-साथ शक्ति संबधी तथा नाना उपदेशात्मक रचनाएँ भारती की यशस्वी लेखनी की अमिट देन हैं।

तमिल में गद्यगीत लिखने का श्रीगणेश भारती से ही होता है। 'वेद रिषिकलिन कविदै' अर्थात् वैदिक ऋषियो की कविता इस प्रकार की ही रचना है। यह वैदिक छंदो के आधार पर विरचित एव सुन्दर काव्य है। 'ज्ञानम् रथम्' भारती की दूसरी गद्यगीतात्मक रचना है। इस रचना में तत्कालीन सामाजिक स्थिति का स्पष्ट परिचय है। इसमें बीते हुए समाज की तुलना भारती ने गन्धर्व लोक से की है। अपने समय की सामाजिक दुरवस्था का उल्लेख करते हुए अंत में यह पश्चात्ताप प्रकट किया गया है कि हमारे बीते हुए दिन अब नही रहे।

भारती न केवल कवि थे, अपितु प्रभावशाली गद्यलेखक तथा पत्रकार भी थे। 'दैनिक स्वदेशमित्रन' के कई वर्षों तक सहकारी सम्पादक रहे। 'दैनिक इण्डिया' के सम्पादक पद से अनेक मौलिक निबंधो को प्रस्तुत कर उन्होंने तमिल साहित्य की श्रीवृद्धि की। 'चन्द्रिकै' नामक एक उपन्यास भी लिखना प्रारम्भ किया था, परन्तु उसके पूर्ण होने के पूर्व ही भारती कराल काल के हाथो हमसे सदा के लिए छीन लिये गये।

भारती की सम्पूर्ण रचनाएँ मद्रास सरकार द्वारा 'भारती ग्रंथावली' के नाम से तीन भागो में प्रकाशित हो चुकी हैं। एक भाग में इनके पद्य, दूसरे में गद्य और तीसरे मे ललित निबंध संगृहीत हैं। ग्रंथावली को जनसुलभ बनाने के लिए मद्रास सरकार ने भारती की समस्त रचनाओ पर स्वत्वाधिकार कर लिया है।

भारती की राष्ट्रीयता

इस संग्रह मे महाकवि सुब्रह्मण्य भारती की राष्ट्रीय कविताओ के पद्यानुवाद

है। *यह समय और समाज की एक मांग थी।* उसकी पूर्ति बनकर भारती आये और साथ में उनकी कविताएँ भी। वह हमारे पराधीन जीवन का ऐसा क्षण था, जब हमारी आत्माएँ स्वतन्त्रता की प्यास से तिलमिला रही थी। मन में स्वाधीनता की चाह थी, पर विदेशियो के पैरों तले हमारी गर्दनें दबी हुई थी। कायरता, *अकर्मण्यता, आलस्य और मजबूरी हमारे ऊपर बलात् लाद दी गई थी।* इन सब के असहनीय बोझ से दबे-दबे हम छटपटा रहे थे, पर बोलने की क्षमता नही थी और समय भी अनुकूल नही था। स्वतंत्रता की आग कही-कही भडक जाती थी, पर उसे गाधीजी जैसे सुदृढ व्यक्तित्व का भली भाँति प्रतिनिधित्व अभी नही मिला था। अत्याचार और अनाचार की पापाग्नी चक्की दिनोंदिन तीव्रतर होती जा रही थी, पर असन्तोष, घृणा और विद्रोह को जन्म देती हुई, पुष्ट बनाती हुई। कुल मिलाकर देश मे जागृति थी, उसे नेतृत्व मात्र चाहिए था। जनता में *आवेश था, जनमानस मे ऊहापोह था, उसे वाणी चाहिए थी। लोग परतंत्रता के* मनहूस धुएँ में घुटते-घुटते खुले वातावरण के लिए लालायित हो उठे थे। अंधकार से *ऊबकर प्रकाश चाहते थे। ऐसे ही समय भारती के संयम का बाँध टूट गया।* उन्होने खुले स्वर में स्वतंत्रता का जयनाद किया। जनमानस की घुटती हुई भावनाओ को नेतृत्व दिया। जिन्हें कुछ कहना था, उन्हें स्वर दिया। दूसरे शब्दो में भारती ने भारत को वाणी दी, समय को स्वर दिया।

स्वतंत्रता-प्राप्ति के बहुत पूर्व ही भारती ने स्वतंत्रता और स्वतंत्र भारत का मोहक चित्र खीचा—
उन्होने मुक्त कंठ से कहा

नाचेंगे हम आनन्द मगन हो नाचेंगे।
आनन्द स्वराज मिला हमको—हम नाचेंगे।
नाचेंगे हम आनन्द मगन हो नाचेंगे।
दिन बीत गया है, ब्राह्मण को, प्रभु कहने का।
गोरे फिरंगियो को हुजूर भी कहने का।

आनेवाले नये भारत का रूप चित्रित करते हुए भारती कहते है—

कांतियुक्त आँखोवाले तू आ आ आ।
भारत! सुदृढ हृदयवाले तू आ आ आ।
अमृत के समान मृदुभाषी आ आ आ।
वज्र स्कधयुक्त भारत तू आ आ आ।

तत्कालीन भारत के प्रति कटुवचन प्रयोग करते हुए भारती कहते है—

मान और अपमान शून्य कुत्ते के जैसा—
आज तुम्हारा जीवन भारत, जा जा जा।

भय के कारण धर न सका कृतज्ञता ज्ञापित—
चाटुकारिता करनेवाले जा जा जा।

स्वतंत्रता से पहले ही भारती ने भारत के जन-जन को समान और स्वतंत्र होने का स्वप्न देखा था। स्वप्न में ही जैसे वह उठ थे

स्वतंत्रता स्वतंत्रता स्वतंत्रता
है स्वतंत्रता भंगी और चर्मकारों को
है स्वतंत्रता आदिवासियों बनजारों को

सबको मिली देश म आज स्वतंत्रता
स्वतंत्रता स्वतंत्र वतंत्रता

अपने नये संविधान की कल्पना करते हुए उन्होंने लिखा—

नियम दूसरे का न रहेगा,
अपना स्वयं विधान बनेगा।
तन मन धन से उसे देश का—
बच्चा बच्चा वरण करेगा।

भारती ने अपने समय के वातावरण का सूक्ष्म दृष्टि से अध्ययन किया था। छुआछूत के प्रश्रय के कारण सामने आनेवाले बुरे परिणामों को उन्होंने आँख खोलकर देखा था। समाज को इस भीषण रोग से बचाने के लिए वे सदैव चेतावनी देते रहे। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सबको महान् होने की बात कही। सभी धर्मों के समान होने का दावा किया—

ब्राह्मण कुल का हो या अछूत,
जो भी है इस भू पर प्रसूत।
है जन्मजात ही वह महान।
सब जाति धर्म, सब जन समान,

हजारों जातियों में बँटी भारत की कई करोड़ जनता का एक ही भारत माँ के गर्भ से प्रसूत बतलाकर विदेशियों को चैतन्य करते हुए भारती ने सबमें एक ही खून के दर्शन किए—

माँ के एक गर्भ से जन्मे
रे विदेशियो भेद न हममें।
मन मुटाव से क्या होता है
हम भाई भाई ही रहेंगे।

साथ रहेंगे तीस कोटि हम
साथ जियेंगे साथ मरेंगे।

एकता का स्वर भारती में सर्वप्रमुख है। उत्तर-दक्षिण, पूरब-पश्चिम आदि की सकुचित धारणा से ऊपर उठकर इन्होंने उदार मन से अखड भारत की कल्पना की है। सभी दिशाओं से, कोने-कोने से व्यापारिक, धार्मिक एव आवागमन सबधी, सबध-सूत्रो के अतिरिक्त सास्कृतिक विनिमय का भारती ने दिल खोलकर आह्वान किया है। इस सबध में कुछ उदाहरण देना समाचीन होगा—

खूब उपजता गेहूँ गगा के कछार मे
ताबूल अच्छे हैं कावेरी के तट के।
ताबूल से विनिमय कर लेंगे गेहूँ का
सिंह समान मरहठो की ओजस् कविता के
पुरस्कार मे उनको हम केरल-गज-दत लुटाएँगे।
सब शत्रुभाव मिट जाएँगे।

दूसरा चित्र देखिए—

सिन्धु नदी की इठलाती उर्मिल धारा पर
उस प्रदेश की मधुर चाँदनीयुत रातो मे
केरलवासिनी अनुपमेय सुन्दरियो के सग,
हम विचरेंगे बल खाती चलती नावो मे
कर्णमधुर होते हैं तेलुगु गीत उन्हे हम गाएँगे
सब शत्रु भाव मिट जाएँगे॥

भारती को अपने देश की सस्कृति, सृजनात्मक क्षमता, मेधा शक्ति और यशोगाथा पर गर्व था। सब दृष्टियो से वे भारत को विश्व में सर्वोत्कृष्ट मानते थे। देश की शक्ति के ऊपर उन्हें विश्वास था। एक स्थान पर वे कहते हैं—

धैर्य शक्ति म, सैन्य शक्ति मे,
परोपकार उदार भाव मे,
सार शास्त्र के ज्ञानदान मे,
भारत सर्वोत्कृष्ट देश है।

भारत की श्रेष्ठता प्रतिपादित करते हुए वे लिखते हैं—

हमारा नभचुबी नगराज,
विश्व म इतना ऊँचा कौन ?
हमारी भागीरथी पवित्र,
नदी इतनी गौरवमय कौन ?

[illegible] सबे

[illegible]
[illegible]
यहाँ की [illegible]
[illegible]
चलो [illegible]
[illegible] ॥

स्वतंत्रता की [illegible] हुए, उसकी रक्षा की [illegible] उनके अनुसार 'जिनके [illegible] इस धरती पर चाहेंगे।' [illegible] है—

नहीं नीर से पाला पोसा,
आँखों का जल देकर सींचा।
हे सर्वेश देख यह पौधा, [illegible]
पिघलेगा क्या?

स्वतंत्रता की प्यास को वे बुझा नहीं पाते। [illegible] है—

प्यास बुझेगी कब अन्तर में [illegible] की
पराधीनता के कब तक [illegible]?

वे अपनी अभीप्सित स्वतंत्रता देवी को [illegible] है—

मैं विनष्ट हो जाऊँ फिर भी
हे स्वतंत्रते भूल न सकता
नमस्कार करना तुम्हें कभी।

उपनिवेश प्रथा की शोषणता से भारती घृणा करने लगे थे। [illegible] ऊँची अट्टालिकाओं में विलास करनेवाले धनिक वर्ग और दूसरी [illegible] फुटपाथ पर रात गुजारनेवाले दीनहीनों को देखकर उनका अन्तर् [illegible] यही कारण है कि उनकी रचनाओं में कहीं-कहीं साम्यवादी स्वर भी [illegible] पड़ता है। उनकी '[illegible]' नामक कविता में एक स्थान पर [illegible] है—

[illegible] अधिकार यहाँ की सब सम्पत्ति पर,
[illegible] जग में रंगमंच पर :
[illegible] तेरी [illegible]

इस कविता मे ही आगे चलकर वे लिखते है—

क्षुधित दिख गया अगर कभी भी
भारत भू का एक व्यक्ति भी—
हम विनष्ट कर देंगे स्थायी
रह न सकेगा विश्व भी कभी।

इस संग्रह में भारती के कुछ देश निर्माण सबंधी गीत भी है। भारत के सर्वांगीण विकास की वे सदा कामना करते थे। कृषि से लेकर कल-कारखाने के साथ-साथ अन्य नाना प्रकार के यंत्रो के निर्माण और विकास का स्वप्न उन्हें सदैव दिखायी देता था। एक चित्र देखिए—

छतरी घोड़े से, खीले से, वायुयान तक,
अपने घर में ही तैयार कराएँगे हम।
कृषि के उपयोगी यंत्रो के साथ साथ ही
इस धरती पर वाहन भव्य बनाएँगे हम।
दुनिया को कम्पित कर दें ऐसे जलयान चलाएँगे।
सब शत्रु भाव मिट जाएँगे॥

तथा—

सरस काव्य की रचना होगी और साथ ही,
कर देंगे चित्रित अति सुन्दर चित्र चितेरे।

जग के सब उद्योग यहीं पर ही स्थापित हो जाएँगे।
सब शत्रु भाव मिट जाएँगे॥

देश को माता के रूप मे मानकर भारती ने उसका कई मोहक रूपो में वर्णन किया है। उसकी गुरुता का चित्र खीचते हुए उन्होने लिखा है—

तीस कोटि मुख, प्राण एक, यह भारत माँ की गुरुता।
एक चिन्तना किन्तु अठारह भाषाओं की समता।

निरत धर्म रक्षा में माँ की साठ करोड़ भुजाएँ।
टुकड़े टुकड़े कर देंगी जो शत्रु युद्ध को आएँ।

सहृदयता, सहिष्णुता तथा क्षमा में स्वयं पृथ्वी से आगे होने पर भी भारत माता आक्रामक अन्यायी के आगे चण्डीरूपा बन जाती है। उसकी जिह्वा पर वेदवाक्य तैरते रहते है। उसके हाथो में सुमंगलकारी खड्ग दुष्टो के दलन और शरणागत की रक्षा हेतु सदैव चमकती रहती हैं। इस प्रकार के ही अनेक रूप भारती ने

चित्रित किए हैं। भारत माता को उन्मत्त रूप में चित्रित करते हुए वे लिखते हैं—

अति भयावह रूप देखो मातु का—
है हमारी माँ प्रबल उन्मादिनि।
यह करेगी प्यार शिव उन्मत्त को,
हाथ मे जो तीव्र ज्वाला है लिये॥

भारत जननी को जगाते हुए भारती कहते हैं—

दीपित्त दिनकर का तेजोमय स्वरूप देखा हमने नभ मे ;
वैसी हो तेरी ज्योति विश्व मे देखें यह इच्छा मन मे।
ले शत्रु प्रकंपित करनेवाला शूल निर्मले, जाग री।
भारत जननी री जाग री॥

स्वतत्र भारत की कल्पना के साथ ही उन्होंने उसके लिए स्वतत्र ध्वजा की भी कल्पना की थी। उनके द्वारा कल्पित ध्वजा आज के 'तिरगे' से बिलकुल ही भिन्न है

यहाँ इन्द्र का वज्रायुध है,
यहाँ तुरक का अर्ध चन्द्र है—
वन्दे माँ, है मध्य अकथ गति का अनुमान लगाओ,
सब मिल करके विनय और श्रद्धा से शीश झुकाओ।

भारती की कल्पना में मूर्त ध्वजा, मात्र रेशमी वस्त्र नही है। झझावात उसका बाल बाँका नही कर सकते। तूफानो में भी वह अविरल गति से लहराती रहती है। उसमें इन्द्र के वज्रायुध के समान दृढ शक्ति है। उसके नीचे दक्षिण के युद्ध-प्रिय तमिल, केरल और तुलुभाषी तथा तैलगो के साथ ही, वीर मरहठे एव हिन्दी प्रदेश के देव-प्रशसित राजपूत एक साथ हुकार करते हैं। उसके नीचे हिन्दुओ के अतिरिक्त तुरको को भी समान आश्रय मिलता है। जात-पात, ऊँच-नीच का भेद, उसकी छाया का स्पर्श नही कर पाता है। स्वतत्रता प्राप्ति से पूर्व के भारतीय समाज की दुरवस्था का स्पष्ट चित्रण भारती ने इस सग्रह की 'वर्तमान भारतीय' नामक कविता में किया है। भारतीयो में कायरता, अकर्मण्यता एवं छल-पाखड अपनी अन्तिम सीमा तक प्रवेश कर गये थे। इन सबका यथार्थ चित्र प्रस्तुत करके भारती ने समाज को अनेक प्रकार की चेतावनियाँ दी हैं। उन सब कुरीतियों को देखकर भारती का हृदय फटने लगता था। एक स्थान पर वे कहते हैं—

देख सिपाही, चौकीदार दिल धडक धडक जायेंगे,
कोई ले बन्दूक चले तो घर मे छिप जायेंगे।

देखें यदि अति दूर सुसज्जित किसी व्यक्ति को आते ;
भय के कारण हाथ जोड़कर स्वयं खड़े हो जाते ।
सबके आगे भीगी बिल्ली बन जाया करता है ;
देख आज के जन की हालत हृदय फटा जाता है ।

इस प्रकार की उद्बोधन और निर्माण संबंधित कविताओं के अतिरिक्त भारती की दो विदेश संबंधी कविताएँ भी इस संग्रह में ग्रहण की गई है । इनमें से एक बेल्जियम की स्तुति में और दूसरी तानाशाह जार के पतन के प्रति लिखी गई है । बेल्जियम की पराजय तो हुई, किन्तु शत्रु के सामने नितान्त शक्तिहीन और साधन हीन होते हुए भी बेल्जियम ने जो पौरुष और पराक्रम दिखलाया था, वह अवर्णनीय है । बेल्जियम के वीरों ने संख्या में अत्यन्त अल्प होते हुए भी जिस वीरता का परिचय दिया था, उसकी प्रशंसा करते हुए इतिहास के पृष्ठ नहीं थकते । इस घटना का गहरा प्रभाव भारती के भावुक हृदय पर हुआ था । इससे प्रभावित होकर ही वे एक स्थान पर लिखते हैं—

सूप से जिसने भगाया व्याघ्र को—
अ तबली उस आदिवासिनी की तरह,
साधनों से दीन होते हुए भी—
विश्व में कृत कर्म से ऊँचे बने ।

स्वाभिमान और वीरता के आधिक्य के कारण ही बेल्जियम का पतन हुआ था । अपने को असमर्थ जानकर भी दृढ़ता के साथ शत्रु का सामना उसने किया था । इसका संकेत करते हुए भारती लिखते हैं—

स्वाभिमानी था पतन तेरा हुआ,
शत्रु शासक नीच, गर्वित शक्ति पर,
अति बलिष्ठ रहा तथापि अभाव में—
शक्ति के भी, रंच मात्र न डरा तू ।

पराजित बेल्जियम की उन्नति की, भारती कामना ही नहीं करते, अपितु विश्वास के स्वर में कहते हैं—

तुम पराजित हुए किन्तु अवश्य ही,
क्रान्ति एक महान् होगी देश में—
क्षणिक अवनति प्राप्त तेरा यह पुनः
पूर्णतः उत्थान पायेगा कभी ।

जार की तानाशाही और उसके पतन से संबंधित कविता में भारती ने तत्कालीन रूस का सच्चा स्वरूप चित्रित कर दिया है । जार की तुलना हिरण्यकशिपु से करते हुए, उसके द्वारा किए गये नाना प्रकार के अत्याचारों की उन्होंने भर्त्सना

की है। उसके शासन में सद्धर्मी और सज्जन अनाथ बनकर तड़प रहे थे। श्रमी किसानों को अन्न नहीं मिलता था। धर्म पर अधर्म हावी था। वहाँ 'हाँ' बोलने की सजा थी कारावास। 'क्यों ?' पूछनेवाले की सजा थी आजन्म वनवास। ऐसे ही समय में क्रान्ति देवी ने अपनी कृपापूर्ण दृष्टि रूस के ऊपर फेरी थी। अपने कुल और सगे सम्बन्धियों सहित यम रूपी जार इस प्रकार विनष्ट हो गया, जैसे कलिकाल रूपी दीवार ही धराशायी हो गई हो। इन सब रूपों का बिम्बात्मक चित्र देकर भारती ने नए रूस से बनते हुए रूसी समाज को कृतयुग की संज्ञा दी है। एक चित्र देखें—

हाँ बोले तो कारावास, मिले वनवास अगर क्यों पूछे।
लुप्त हुआ सद्धर्म, अधर्म, धर्म था नीच जार के नीचे।

उपरोक्त सभी कविताओं से भिन्न दो और विशिष्ट कविताएँ इस संग्रह में संगृहीत हैं। 'भारत माता के पवित्र दशांग', 'नवरत्न माला', ये प्राचीन तमिल शैली के आधार पर विरचित भारत माता की प्रशस्तियाँ ही हैं।

अन्त में आभार प्रदर्शन शेष रह जाता है। प्रकाशन और मुद्रण में लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद से हमें अपूर्व सहयोग प्राप्त हुआ है। इसके लिए हम उनके हृदय से आभारी हैं।

डॉ० विद्यानिवास मिश्र ने (संप्रति अध्यक्ष एवं आचार्य, भाषा शास्त्र विभाग, वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय) इस संग्रह के प्रति 'दो शब्द' लिखकर जो महत्व प्रदान किया है, उसके लिए हम जितना भी लिखें, अल्प ही है। वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय के आचार्य श्री लक्ष्मीनारायण तिवारी की अमूल्य सहायता धन्यवाद के साथ ही कभी न भूलने के लिए हमें बाध्य करती है।

समय-समय पर आवश्यक परामर्श देकर श्रद्धेय प्र० श्रीनिवास राघवन्, मित्रवर विमलेश कांति वर्मा एवं आदरणीय बन्धु श्री कन्धस्वरन् ने अनुगृहीत किया है। बन्धुवर श्री गोपालकृष्णन् ने अनेक शंकाओं का समाधान करके तथा श्री मणि ने कविवर भारती का चित्र भेजकर पुस्तक के महत्व में पर्याप्त सहयोग दिया है। हम इन सबके प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।

बापू बाल-समाज के संस्थापक श्री टी० कृष्णस्वामी एवं दक्षिण भारत समाज, जबलपुर के कार्यकर्ताओं, विशेषकर समाज के मंत्री श्री कृष्णस्वामी के हम ऋणी हैं, जिन्होंने अनेक सभाओं का आयोजन करके हमारे अनुवादों को जनसाधारण तक पहुँचाने का सुअवसर दिया है।

कस्तूरी कललय, मद्रास के कलाकार श्री रमणन् एवं कुमारी कल्पलता ने 'नाचेंगे हम....' गीत का भावाभिनय कर इस रूपान्तर के महत्व को बढ़ा दिया है। एतदर्थ वे हमारे धन्यवाद के पात्र हैं।

साप्ताहिक 'धर्मयुग' ने हमारे अनुवादों को विशेष अवसरों पर प्रकाशित कर हमें प्रोत्साहित किया है। इसके अतिरिक्त 'आजकल', 'नवभारत' 'आज', 'नई दुनिया' 'युगधर्म', 'भारत' आदि पत्र-पत्रिकाओं ने इन अनुवादों को प्रकाशित कर व्यापक महत्त्व दिया है। इन सबके प्रति आभार प्रदर्शन हमारा कर्तव्य है।

जबलपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के आचार्य गुरुवर डॉ० उदय नारायण तिवारी के प्रति हम नतमस्तक हैं, जिनके प्रोत्साहन के फलस्वरूप ही यह कार्य सम्पन्न हो सका है।

अन्त में, मैं स्नेही बन्धु श्री जग्गीलाल गुप्ता एवं अन्य मित्रों का स्मरण करना अपना कर्तव्य समझता हूँ, जिनकी प्रेरणा व आर्थिक सहायता पाकर इस साहित्यिक आदान-प्रदान-कार्य में प्रवृत्त हुआ और इस कार्य को सम्पन्न कर सका। वस्तुतः यह सम्पूर्ण कार्य उन्हीं की प्रेरणा का प्रतिफल है।

—सुन्दरम्
—विश्वनाथ 'विश्वासी'

सुब्रह्मण्य भारती
की
राष्ट्रीय
कविताएँ
•
•

रे विदेशियो ! भेद न हममें

हम वन्दे मातरम् कहेंगे ।
बार-बार हाँ, बार-बार भारत भू को वन्दना करेंगे ।
हम वन्दे मातरम् कहेंगे ॥

ब्राह्मण कुल का हो या अछूत,
जो भी है इस भू पर प्रसूत,
है जन्मजात ही वह महान्,
सब जाति-धर्म, सब जन समान ।
ऊँच-नीच का भेद भुलाकर, जाति-धर्म का दम न भरेंगे ।
हम वन्दे मातरम् कहेंगे ॥१॥

जो भी अछूत, क्या व्यर्थ सभी ?
जन-जीवन मे सार्थक न कभी ?
क्या वे चीनी बन जायेंगे ?
हम को कुछ क्षति पहुँचायेंगे ?
यह नितात दु साध्य, असम्भव, ये न विदेशी कभी बनेंगे ।
हम वन्दे मातरम् कहेंगे ॥२॥

सहस्र जाति का देश हमारा,
चाहेगा सबल न तुम्हारा ।
माँ के एक गर्भ से जनमे
रे विदेशियो ! भेद न हममे ।
मनमुटाव से क्या होता है, हम भाई-भाई ही रहेंगे ।
हम वन्दे मातरम् कहेंगे ॥३॥

वैर भाव है हममे जब तक,
अध पतन ही होगा तब तक ।
जीवन मधुमय बना रहेगा,
यदि हममें सगठन रहेगा ।

यही ज्ञान यदि आ जाये तो, और अधिक हम क्या चाहेगें ?
हम वन्दे मातरम् कहेगे ॥४॥

लेकर सब का सबल सहारा ,
होगा पूर्णोत्थान हमारा ।
ऊँचा जितना माथ रहेगा ,
उसमे सबका हाथ रहेगा ।
साथ रहेगे तीस कोटि हम, साथ जियेंगे, साथ मरेंगे ।
हम वन्दे मातरम् कहेगे ॥५॥

दास वृत्ति करते आए हैं, ,
नीच दास हम कहलाए है ।
गत जीवन पर लज्जित होवें ,
चिर कलक मस्तक का धोवें ।
कर लें यह सकल्प कि पहले सरिस न हम परतन्त्र रहेगे ॥
बार-बार हाँ, बार-बार भारत भू की वन्दना करेंगे ।
हम वन्दे मातरम् कहेगे ॥६॥

वन्दे मातरम्

जय भारत जय वन्दे मातरम् ॥
जय-जय भारत, जय-जय भारत, जय-जय भारत, वन्दे मातरम् ।
जय भारत जय वन्दे मातरम् ॥

एक वाक्य है केवल, जिसको दुहराना है,
आर्य भूमि की आर्य नारियो नर सूर्यों को वन्दे मातरम् ।
जय भारत जय वन्दे मातरम् ॥

एक वाक्य है केवल, जिसको दुहराना है,
घुट-घुटकर मरते भी अति पीडित जन-जन को वन्दे मातरम् ।
जय भारत जय वन्दे मातरम् ॥

प्राण जायें पर चिर नूतन उमंग से भरकर
केवल एक वाक्य गायेंगे हम सब मिलकर वन्दे मातरम् ।
जय भारत जय वन्दे मातरम् ॥

जय-जय भारत, जय-जय भारत, जय-जय भारत, वन्दे मातरम् ।
जय भारत जय वन्दे मातरम् ॥



नमन करें इस देश को

इसी देश में मातु-पिता जनमें पाए आनन्द अपार,
और हजारों वरसों तक पूर्वज भी जीते रहे–
अमित भाव फूले-फले जिनके चिन्तन में यहीं।
मुक्त कंठ से वन्दना और प्रशंसा हम करें–
कहकर वन्दे मातरम्, नमन करें इस देश को ॥१॥

इसी देश में जीवन पाया, हमको बौद्धिक शक्ति मिली,
माताओं ने सुख लूटा है, जीवन का वात्सल्य भरे–
मोद मनाया है यहीं जुन्हाई में हँसकर क्वाँरेपन का।
घाटों पर, नदियों के पोखर के क्रीड़ाओं की आनन्दभरी
कहकर वन्दे मातरम्, नमन करें इस देश को ॥२॥

गार्हस्थ्य को यहाँ नारियों ने पल्लवित किया है,
गले लगाया है जनकर सोने के से बेटों को–
भरे पड़े हैं नभचुंबी देवालय भी इस देश में।
निज पितरों की अस्थियाँ इस माटी में मिल गईं–
कहकर वन्दे मातरम्, नमन करें इस देश को ॥३॥

●

भारत सर्वोत्कृष्ट देश है

भारत सर्वोत्कृष्ट देश है।
निखिल विश्व मे, अपना सर्वोत्कृष्ट देश है।
अपना सर्वोत्कृष्ट देश है।

भक्ति, विराग, प्रचण्ड ज्ञान मे,
स्व गौरव मे, अन्न दान मे
अमृत वर्षक काव्य गान मे
भारत सर्वोत्कृष्ट देश है ॥१॥

धैर्य शक्ति मे, सैन्य शक्ति में
परोपकार, उदार भाव में,
सार शास्त्रो के ज्ञान दान मे–
भारत सर्वोत्कृष्ट देश है ॥२॥

नेकी में, तन की क्षमता मे
संस्कृति में, अपनी दृढ़ता में
स्वर्ण – मयूरी पतिव्रता में–
भारत सर्वोत्कृष्ट देश है ॥३॥

नव रचनात्मक कार्यों मे रत
उद्योगो मे परमोत्साहित,
भुजबल और पराक्रम मंडित–
भारत सर्वोत्कृष्ट देश है ॥४॥

अति महान् आदर्शोंवाला,
अवनी रक्षा का मतवाला,
सिन्धु सदृश बृहद् अनीवाला—
भारत सर्वोत्कृष्ट देश है ॥५॥

मेधा शक्ति, मनोदृढ़ता में,
शुभ संकल्प, कार्यक्षमता मे–
सत्य भावमय ध्रुव कवि गण में–
भारत सर्वोत्कृष्ट देश है ॥६॥

याग यज्ञ में, तपस् तेज में,
ईशोपासन, योग - भोग में,
उत्तम दैव प्रदत्त ज्ञान में–
भारत सर्वोत्कृष्ट देश है ॥७॥

वृक्षराशि, वन भाग के लिए,
अधिक उपज, फल प्राप्ति के लिए
अक्षुण्ण निधि आगार के लिए
भारत सर्वोत्कृष्ट देश है ॥८॥





सब शत्रुभाव मिट जायेंगे

भारत देश नाम भयहारी, जन-जन इसको गायेंगे।
सब शत्रुभाव मिट जायेंगे॥

विचरण होगा हिमाच्छन्न शीतल प्रदेश मे,
पोत सतरण विस्तृत सागर की छाती पर।
होगा नव-निर्माण सब कही देवालय का–
पावनतम भारत भू की उदार माटी पर।
यह भारत है देश हमारा कहकर मोद मनायेंगे।
सब शत्रुभाव मिट जायेंगे॥१॥

हम सेतुबध ऊँचा कर मार्ग बनायेंगे,
पुल द्वारा सिंहल द्वीप हिन्द से जोडेंगे।
जो बग देश से होकर सागर मे गिरते,
उन जल-मार्गों का मुख पश्चिम को मोडेंगे।
उस जल से ही मध्य देश मे अधिक अन्न उपजायेंगे।
सब शत्रुभाव मिट जायेंगे॥२॥

खोज लिया जायेगा, सोने की खानो को,
खोद लिया जायेगा, स्वर्ण हमारा होगा।
आठ दिशाओ मे, दुनियाँ के हर कोने मे–
सोने का अतुलित निर्यात हमारा होगा।
स्वर्ण बेचकर अपने घर मे नाना वस्तु मँगायेंगे।
सब शत्रुभाव मिट जायेंगे॥३॥

डुबकी लगा करेगी नित दक्षिण सागर मे
लेंगी मुक्ताराशि निकाल हमारी बाँहे
मचलेंगे दुनियाँ के व्यापारी, पश्चिम के—
तट पर खडे देखने सदा हमारी राहे
कृपाकाक्षी बनकर वे हर वस्तु बाहिन लायेंगे।
सब शत्रुभाव मिट जायेंगे॥४॥

सिन्धु नदी की इठलाती उर्मिल धारा पर—
उस प्रदेश की मधुर चाँदनीयुत रातो मे।
केरलवासिनि अनुपमेय सुन्दरियो के सग—
हम विचरेंगे वल खाती चलती नावो मे
कर्णमधुर होते हैं तेलुगु गीत उन्हे हम गायेंगे।
सब शत्रुभाव मिट जायेंगे ॥५॥

खूब उपजता गेहूँ गगा के कछार मे,
ताम्बूल अच्छे हैं कावेरी के तट के,
ताम्बूल दे विनिमय कर लेंगे गेहूँ का—
सिह समान मरहठो की ओजस् कविता के—
पुरस्कार मे उनको हम केरल गजदत लुटायेंगे।
सब शत्रुभाव मिट जायेंगे ॥६॥

ऐसे यन्त्र बनेंगे, काचीपुरम बैठकर—
काशी के विद्वज्जन का सवाद सुनेंगे।
लेंगे खोद स्वर्ण सब कन्नड प्रदेश का—
जिसका स्वर्णपदक के हेतु प्रयोग करेंगे।
राजपूत वीरो को हम ये स्वर्णपदक दे पायेंगे
सब शत्रुभाव मिट जायेंगे ॥७॥

यहाँ रेशमी वस्त्र बनाकर उन वस्त्रो की—
एक बहुत ऊँची सी ढेर लगा देंगे हम।
इतना सूती वस्त्र यहाँ निर्माण करेंगे—
वस्त्रो का ही एक पहाड बना देंगे हम।
बेचेंगे काशी वणिको को अधिक द्रव्य जो लायेंगे।
सब शत्रुभाव मिट जायेंगे ॥८॥

अस्त्र शस्त्र का, कागज का उत्पादन होगा,
सदा सत्य वचनो का हम व्यवहार करेंगे।
औद्योगिक, शैक्षणिक शालाएँ निर्मित होगी—
कार्य म कभी रच मात्र विश्राम न लेंगे।
कुछ न असभव हमे, असम्भव को सम्भव कर पायेंगे।
सब शत्रुभाव मिट जायेंगे ॥९॥

छतरी बाढ़े से, खीले से वायुयान तक—
अपने घर में ही तैयार करायेंगे हम।
कृषि के उपयोगी यन्त्रों के साथ-साथ ही—
इस धरती पर वाहन भव्य बनायेंगे हम।
दुनियाँ को कंपित कर दे, ऐसे जलयान चलायेंगे।
सब शत्रुभाव मिट जायेंगे ॥१०॥

मन्त्र-तन्त्र सीखेंगे, नभ को भी नापेंगे,
अतल सिन्धु के तल पर से होकर आयेंगे।
हम उड़ान भर चन्द्रलोक में चन्द्रवृत्त का—
दर्शन करके मन को आनंदित पायेंगे।
गली-गली के श्रमिकों को भी शास्त्रज्ञान सिखलायेंगे।
सब शत्रुभाव मिट जायेंगे ॥११॥

सरस काव्य की रचना होगी और साथ ही—
कर देंगे चित्रित अति सुन्दर चित्र चितेरे।
हरे-भरे होंगे वन-उपवन, छोटे धंधे—
सुई से, बढ़ई तक के होंगे घर मेरे।
जग के सब उद्योग यहीं पर ही स्थापित हो जायेंगे।
सब शत्रुभाव मिट जायेंगे ॥१२॥

मात्र जातियाँ दो, नर-नारी अन्य न कोई,
सद्वचनों से मार्गप्रदर्शक मान श्रेष्ठ है।
अन्य सभी हैं तुच्छ कभी जो पथ न दिखलाते
चिर सुकुमारी अपनी मधुर तमिल वरिष्ठ है।
इसके अमृत के समान वचनों को हम अपनायेंगे।
सब शत्रुभाव मिट जायेंगे ॥१३॥

चलो गावें हम

हमारा नभ-चुम्बी नगराज,
विश्व मे इतना ऊंचा कौन ?
हमारी ही भागीरथी पवित्र,
नदी इतनी गौरवमय कौन ?
हमारे ही उपनिषद् महान्,
श्रेष्ठतम कहे विश्व हो मौन।
जहाँ की धरती ही दिन-रात स्वर्ण किरणो की चमक रही।
चलो गावें हम 'भारत की समता मे कोई देश नहीं' ॥१॥

देश जो ऋषियो की तपभूमि,
जहाँ पर उपजे वीर महान्,
जहाँ गूँजे नारद के गीत,
जहाँ सद्विषयो का सम्मान।
जहाँ पर अतुल ज्ञान है भरा,
दिये उपदेश बुद्ध भगवान्।
हिन्द से अधिक, विश्व मे कोई देश कही प्राचीन नही॥
चलो गावें हम 'भारत की समता मे कोई देश नहीं' ॥२॥

विघ्न-बाधाओ से क्यो डरें ?
दीन बन कष्ट न भोगें कभी।
स्वार्थ मे नीच कर्म क्यो करे ?
निराश न हो इस भू पर कभी।
मूल, फल, कदली, पय, मध, धान,
भरे-पूरे भारत मे सभी।
आर्यजन की इस धरा समान, समुन्नत धरा न दूजी कही।
चलो गावें हम 'भारत की समता मे कोई देश नहीं' ॥३॥

●

जय भारत

कभी बुद्धिमत्ता से अपनी
जीते थे शत देश महान्
विजित बहादुर उन देशो के
करते थे तेरा जय गान
कभी धीरता गरिमा और
शौर्य भी धर्म निज खो बैठो हो
फिर भी धर्म अटल जननी
जय हो, तेरी सदैव जय हो ॥१॥

रचना हुई कोटि ग्रंथो की,
शत देशो के प्रतिनिधि पडित।
आये विषय ज्ञान पाने को
अतिशय मन कामना मडित
कभी ज्ञान का स्तर गिरने पर,
परम अधोन्नति भी पाई हो।
फिर भी शाश्वत सत्य पर अटल-
माँ, तेरी जय हो, जय हो ॥२॥

कुठित हुई शक्ति जब वीरो
के असि की क्षमता अतुलित
घटी, ज्ञानप्रद सद्ग्रथो की
रचना शक्ति हुई शिथिलित
ऐसे विषम समय मे भी
तुम नही प्रकम्पित होतो हो
उपयोगी सद्ग्रन्थो की
रक्षक, माता तेरी जय हो ॥३॥

देवगणो के लिए स्वादमय,
मधुरिम अमृत कुम्भ समान।
माँ तेरा ऐश्वर्य रहे
पूरा सागर की भाँति

पापी हृदय शक्ति तेरी
हरने का सदा यत्न करता हो।
फिर भी अक्षुण्ण निधिधारी
माता मेरी, तेरी जय हो ॥४॥

इस भू को उत्कृष्ट किया
कर, सुखप्रद उद्योगो-धधो को
तुमने जन्म दिया आनन्द-
प्रदायक कितने ही धर्मों को-
सत्य खोजने जो आये हैं
उनको सत्य दान मे दी हो
हमको भी स्वतन्त्रता के प्रति
आकाक्षा दी, तेरी जय हो ॥५॥



भारत माता

जिसने लंका के निशाचरो का हनन किया वह धनु किसका है ?
वह धनुष आर्य रानी ! भयकरी ! अपनी भारत देवी का ॥१॥

जिसने दो टुकड़े इन्द्रजीत के कर डाला वह धनु किसका है ?
वह मंत्र मुग्ध करलेवाली भैरवी ! हमारी जननी का ॥२॥

'परब्रह्म एक', हम पुत्र सभी, जग सुखमय तरणी के समान ।
वेदादि ग्रंथ मे लिखनेवाले भारत माँ के कर महान् ॥३॥

श्रय सिद्ध, जग सत्य, चित्त मे स्थिर हो जाय तो सब ही—
बाधाओ पर पा सकें विजय, यह कथन आर्य रानी ही का ॥४॥

केहरि शावक के साथ खेल, उज्ज्वल यश भारत रानी का—
उज्ज्वलतर करता शकुंतला-शिशु, निज भारत माँ ही का ॥५॥

गाडीव पार्थ की चढा, विश्व विजयी पत्थर स्कन्ध किसका ?
जो हम सबका पालन-पोषण करती उस भारत जननी का ॥६॥

मरणासन्न समय मे भी निज कुंडल दे डाले पर किसके ?
वे कर मधुरिम भाषा मे कवि वर्णित निज भारत माता के ॥७॥

युद्ध भूमि मे ज्ञानमयी गीता का गायक था मुख जिसका ?
वह शत्रुता, विनाशक ज्ञानप्रदायक मुख भारत माता का ॥८॥

सुत के लिए पिता के, सुख-शासन का और मोद दारा का—
कभी न चाहूँगा जग मे, कहनेवाला अन्तर निज माँ का ॥९॥

'शिव है प्रेम, विश्व-दुख मिट सकता है सारा प्रेम मात्र से'—
वचन तथागत के निकले थे भारत माता के ही मुख से ॥१०॥

मिथिला जलती है सुनकर भी, वेद तत्व सुनते विदेह की—
निज चिंतन से कार्य करे जो मति, वह मति भारत जननी की ॥११॥

यह दैविक शकुन्तला नाटक, किसकी मधुर काव्य रचना है ?
यह भारत देवी, सर्वज्ञ हमारी माता की कविता है ॥१

भारत माँ की गुरुता

क्षमतामय सर्वज्ञ और जो भूतकाल का ज्ञाता,
वह भी सोच नहीं सकता कब जन्मी भारत माता ॥१॥

है इतनी प्राचीन कि कह सकना आसान नहीं है,
पर माता जग में चिरकुमारी ही सभी कहीं है ॥२॥

तीस कोटि मुख, प्राण एक, यह भारत माँ की गुरुता।
एक चिन्तन किन्तु अठारह भाषाओं की क्षमता ॥३॥

वेद-वाक्य जिह्वा पर, कर में खड्ग सुमंगलकारी।
दुष्ट-दलन, शरणागत रक्षा हित सुबाहु बलधारी ॥४॥

निरत धर्मरक्षा में माँ की साठ करोड़ भुजाएँ।
टुकड़े-टुकड़े कर देंगी जो शत्रु युद्ध को आएँ ॥५॥

सहृदय और सहिष्णु, क्षमा में माँ धरती से आगे।
पर चण्डी रूपा आक्रामक अन्यायी के आगे ॥६॥

चन्द्रमौलि, तपसी को, सिर पर जटा-जूटधारी को–
नमन करेगी सप्त लोक पालक सुचक्रपाणि को ॥७॥

मानें एक ब्रह्म की सत्ता, अद्वितीय योगिनि है।
अनुपमेय ऐश्वर्य समन्वित एक महा भोगिनि है ॥८॥

धर्मपाल शासक का भला करेगी करुणा देकर।
हो भक्षक तो नृत्य करे आनदित उसे निगलकर ॥९॥

है नगपति की शालिनि तनुजा, फुफकारती रहेगी।
मिटे हिमालय की सब शक्ति, न माँ की कभी मिटेगी ॥१०॥

●

उन्मादिनि माँ

अति भयावह रूप देखो मातु का
है हमारी माँ प्रबल उन्मादिनी।
यह करेगी प्यार शिव उन्मत्त को
हाथ मे जो तीव्र ज्वाला है लिए ॥१॥

उस मधुर सगीत सागर की प्रबल-
मचलती सी उर्मियो की बाढ मे
पुलक अवगाहन करेगी डूबकर
मोद मे गोता लगायेगी सदा ॥२॥

अमृतवर्षी कवित उपवन मे जहाँ
पवन नित दैविक सुगन्धि लिये चले।
पहन हार परागपूर्ण प्रसून का
माँ करेगी नृत्य, कर मे जाम ले ॥३॥

जान लो यह वेदध्वनि उच्चारती
सत्य का ले शूल नाचेगी सदा।
मनन कर पठनीय शास्त्रो को सभी
वपन कर देगी जगत के सामने ॥४॥

महाभारत युद्ध क्या कुछ खेल है ?
प्रकट होगी पार्थ की गाडीव मे।
काट चरण मे कोटि रिपुओ को सदा-
माँ मगन डूबी रहेगी रक्त मे ॥५॥

भारत जननी री ! जाग री !

भारत जननी री ! जाग री !
पौ फटी निविड़तम दूर हुआ, धरती से हम सबके तप से ।
कनकाभा फैली, बुद्धि-सूर्य भी दीप्त हो उठा है अब से ।
करके स्तुति पुनः नमन करने के लिए तुम्हे भारत जननी-
हैं यहाँ सहस्र स्वयंसेवक भी खड़े प्रतीक्षा में कब से ॥
आश्चर्य यही तुम अब भी सोती हो री ! माता जाग री !
भारत जननी री ! जाग री ! ॥१॥

बज उठे विशाल नगाड़े, पक्षी कुल चह-चह कर कूज रहा ।
हो उठे निनादित धवल शंख, रव स्वतंत्रता का गूँज रहा ।
आने-जाने है लगी रमणियाँ, पथ मुखरित पदचापों से—
ब्राह्मण कुल वेद-निपुण तेरा सकीर्तन सबको सुना रहा ॥
हे अमृत वर्षिणि ! मातु हमारी, प्राण प्यारी, जाग री !
भारत जननी री ! जाग री ! ॥२॥

दीपित दिनकर का तेजोमय स्वरूप देखा हमने नभ में ।
वैसी ही तेरी ज्योति विश्व में देखें यह इच्छा मन में ।
तेरी पद-सेवा हेतु पके फल सा मृदु अन्तर ले आये—
तुमसे सुसस्कृति कोटि शास्त्र एव श्रुतियाँ पायी जग मे ॥
ले शभु प्रकपित करनेवाले शूल निर्मले ! जाग री !
भारत जननी री ! जाग री ! ॥३॥

क्या नही जानती, दृग सौन्दर्य देखने को है माँ तेरे—
कितनी आकाक्षाएँ उमडा करती अन्तर्मन मे मेरे ।
हे कनक वर्णवाली माता, धवलित हिमगिरि की तपजाया—
कितने युग तप करके भी लाले होगे तब कृपा के रे ?
क्या सत्य की अब तक है तू सोयी प्राण प्यारी जाग री ।
भारत जननी री ! जाग री ! ॥४॥

क्या उचित कि हम शिशु जगा रहे, लेकिन रे जननी तू सोती ?
भू-अधिष्ठात्री ! तुतली वाणी पर न द्रवित जो माँ होती ?
' गो-मातु ! देश वाणी ! ! करते स्तुति अठारहों भाषाओं में
अपनाकर कर देती कृतार्थ तो सबकी मनस्तृप्ति होती ।
क्या नहीं सुन रही तुम यह सब, वात्सल्य भरी माँ जाग री !
भारत जननी री ! जाग री ! ॥५॥



भारत माँ के पवित्र दशांक

१. *नामकरण*

हरित वर्णवाले प्रिय तोते! उस माता का नाम बता,
जिसने मुझसे पापी को भी श्रेष्ठ योग का ज्ञान दिया।
पूर्ण ज्ञान का कीर्तिरूप दीपक जिसने प्रज्ज्वलित किया—
इस धरती पर भारत माता ही वह माता है, तू गा।

२. देश

मृदुल कंठवाले तोते! उस स्वर्ण देश का नाम बता,
देवी मेरे लिए जहाँ की बनी प्रकट आनन्द समान।
नभचुम्बी नगराज हिमालय से कन्याकुमारी तक-
फैला विस्तृत आर्य देश ही है वह देश, इसे तू जान।

३. नगर

तुतली वाणीवाले शुक! हम सबकी प्राण प्यारी माँ,
हम सबके क्षेमार्थ व्यस्त नित किस नगरी में रहती है?
प्राप्त अहं ब्रह्मास्मि ज्ञान को, योगी जहाँ विचरते है—
प्राणों से बढ़कर प्रिय काशी नगरी ही, वह नगरी है।

४. नदी

अरे रँगीले तोते! वन्दे माँ कहकर स्तुति करें अगर—
तो विनाश से बचा, क्षेमदायक सरिता है कौन कहो?
निज पथ पर सत्कार्य और सद्धर्म, स्वर्ण उपजानेवाली,
गंगा यहाँ गगन से आयी, उसका ही गुणगान करो।

५. पर्वत

हे वाटिका-विहारी तोते! इतना तो तू मुझे बता—
निज तनुजा को अंक समेटे, चतुर्वेदधारी गिरि कौन?
अद्वितीय जग के शृंगों में, सबसे उच्च गगनचुंबी।
कांतियुक्त, द्युति धवल, हिमालय ही वह गिरि है देखो।

६. वाहन

तोते बता प्रमत्त शान में और परम ऐश्वर्य में पगी—
मातु हमारी किस वाहन पर चढ़कर मार्ग चला करती है
रथ पर अथवा अश्व पर नहीं, विश्व प्रकंपित करनेवाले-
केहरि पर होकर आरूढ़ सदा पर्यटन किया करती है।

७. सेना

शुक रे! माता अति कृपालु है, फिर भी कभी कुपित होने पर,
शत्रु समूल संहार करे जो, उसकी वह वाहिनी कौन है ?
केवल अपने दृष्टिपात से, निज प्रतिद्वन्द्वी आक्रामक पर;
उसे समूल विनष्ट करे जो, ऐसा ही वह वज्रायुध है।

८. नगाड़ा

प्यारे तोते ! निज माता के यहाँ सदा प्रशस्त आँगन में—
जय निनाद करता रहता है, मुझे बता कौन नगाड़ा ?
सत्यंवद, धर्मंमूचर ऐसे शब्दों से गुंजायमान जो—
जीव मुक्ति देनेवाला वह वेदस्वरूप विशाल नगाड़ा।

९. माला

आओ शुक! बतलाओ निज भक्तों को अतुलित सुख की दाता—
माता सदय, कंबु ग्रीवा में कौन माल धारण करती है ?
रिपुओं से पार्थक्य, मात्र मुस्कान पसार, मिटानेवाली—
जननी, कनक कमल की माला पहन सदैव जगमगाती है।

१०. पताका

मोती सदृश वर्णवाले शुक ! कह शत्रुता और अन्याय,
खण्डित करनेवाली माँ की कौन समुज्ज्वल विजय ध्वजा ?
परिपालन हित शिष्ट जनों के, दुष्ट जनों के निग्रह हित—
वज्र सदृश जाज्वल्यमान जो ध्वजा, वही वह अटल ध्वजा।

●

भारत माता की नव रत्नमाला

मंगलाचरण

तीस कोटि वीरो की जननी, भारत माँ के कमल चरणो मे,
मैं यह नव रत्नो की माला सादर अर्पित करता हूँ।
शिव के रत्नपुत्र! मेरी भव बाधाओ को दूर करे।

१

आँखो की पुतली हे भारत! तेरे नामोच्चारण से,
उत्तम नग सा कान्तियुक्त तन, धर्मनिष्ठ मति, चिन्तन शक्ति,
और अनेकानेक लाभ हम प्राप्त करेंगे बिना प्रयास।

२

नील सिन्धुरूपा त्रिनेत्र, जो सेतु बनाती समय सिन्धु पर,
उसका पादस्पर्श करें तो हमसे यम कँपायेगा थर-थर।
भयाक्रान्त यम की काया, कर जोडेगी, भग जायेगी,
कहाँ शत्रुता मे क्षमता, जो हमसे आँख लडायेगी?

३

मोती से विशुद्ध मणि वचनो को कहकर सबके पास
तुमने रचे पुराण, उपनिषद्, वेद और अनगिन इतिहास
कितने ज्ञानयुक्त शास्त्रो का सृजन किया री! महा समर्थ
हम जिनकी स्तुति और प्रशसा करने मे भी हैं असमर्थ
देखो माँ, सब ज्योतिपुज बन यत्र-तत्र जगमगा रहे हैं
ये वास्तविक विजय त्रिभुवर के, काल से परे, अमर देन हैं

४

धवल शख फूँको सब जय-जयकार करो
सदा ज्ञानियो से यह वसुधरा रक्षित है,
सुनो, मानते रहे आज तक वीर अधर्मी
बुद्धियुक्त यह कार्य बुद्धिमानो के जग मे,

शीर्ष मुकुट में धारण करना अनाचार को--
और बनाकर रखना दास मनुष्य मात्र को।

नीच शासकों ने कलंकिनी शैन्य शक्ति से--
ओछे न्याय विधान धरा पर रच डाले थे।
किन्तु आज भारत ने दुनियां के समक्ष यह
नया धर्म प्रस्तुत कर हमें चेतना दी है।

कान खोलकर सुनो, ध्यान दो उन वचनों पर-
मधुर प्रवालों सी कविता के सर्जनकर्ता
विश्व कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ने कहा था जिन्हें,
गांधी अवतरित हुए हैं आदर्श पुरुष के रूप में।
पावन भारत धरती पर धर्मावतार के रूप में।
राजनीति के धर्म में पथ निर्देशक मान,
वेदवाक्य इनका सुन, 'केवल सत्य महान्'
राजनीति के परे भी जितने जग के काम--
सदा विजय पाता है, उनमें सत्य ललाम!
वेदनाद जो अधर से बापू के झरते रहे।
पालन उनका अन्त तक अक्षरतः करते रहे।
हम देखेंगे शीघ्र ही, रक्षा संभव विश्व की--
सदा ज्ञानियों से हुई, आगे होती रहेगी।
रक्षक केवल धर्म है, सैन्य शक्ति असमर्थ,
चूर - चूर हो जायेगी, हो जायेगी व्यर्थ।

धवल शंख फूंको सब जय-जय नाद करो।
सदा ज्ञानियों से यह वसुन्धरा रक्षित है।

५

जय ध्वनि बोलो मनोवांछा नभ में गूंज उठे।
धर्म, बृहद् नादों से हवा निनादित लहर उठे॥

कन्तियुक्त माणिक्य अहिंसा और सत्य के।
धर्म रूप में हमने अपनाए हैं बढ़ के॥

हमें न अन्न पीडा सहनी है, यह निश्चित है।
हमें प्राप्त होगी स्वतन्त्रता, यह निश्चत है॥

६

सुदृढ जान लो अपने मन मे, मन की बात हमारी।
शपथ कृष्ण के पाद कमल की मरकत छायाधारी॥
दूषित नही, अगर जन-जन का मन पवित्र है।
स्वतन्त्रता उपलब्ध हमें होगी निश्चित है॥

७

हम स्वतन्त्रता प्राप्त करेंगे जय पायेंगे
अहिंसात्मक क्रान्ति बढाता रहा बोलकर,
पतन और शैथिल्य नही सेवक को जैसे—
उष्ण-शीत का भान नही होता आत्मा को।

धर्मयुद्ध के लिए कटिबद्ध रहो तुम
कहता रहता सबसे यही प्रतिज्ञा साधी
करता रहता है जयनाद सभी के आगे—
गौमेतक सा महत् हमारा नेता गाधी।

८

फेरे कृपा कटाक्ष खडी, स्वर्णिम भारत पर,
करती सदा निवास कान्तियुत जो देवी श्री—
पद्मराग मणि सदृश सुगधित पुष्पराशि मे।
भूल ही गये नर, शैथिल्य और निज भय को-
क्योकि सभी ने गाधी का जयघोष सुना है।

९

ज्वालामय वैदूर्य सदृश आँखो से शोभित—
सिंह पर सदा विचरण करनेवाली माता।
क्षण भर के ही लिए हमारे सम्मुख आओ।
कृपाकाक्षी देशो की कर दूर यातना दिव्यस्वरूपा,
मुस्काकर आनन्द सिन्धु मे हमे डुबाओ।

भारत माँ की ध्वजा

यह बहुमूल्य ध्वजा भारत माँ की है देखो आओ।
सब मिल करके श्रद्धा और विनय से शीश झुकाओ॥

कितना ऊँचा ध्वज-स्तम्भ है
यह वन्दे मातरम् लिखित है—
चमक रहा जो, फहर रही किस गति से दृष्टि टिकाओ।
सब मिल करके श्रद्धा और विनय से शीश झुकाओ ॥१॥

यह न मात्र रेशमी वस्त्र है।
झंझावातों से न त्रस्त है—
तूफानों से भी अविचल उड़ती है मोद मनाओ।
सब मिल करके श्रद्धा और विनय से शीश झुकाओ ॥२॥

यहाँ इन्द्र का वज्रायुध है।
यहा तुरक का अर्ध-चन्द्र है—
वन्दे माँ है मध्य, अमित गति का अनुमान लगाओ।
सब मिल करके श्रद्धा और विनय से शीश झुकाओ ॥३॥

देखो ध्वज स्तम्भ के नीचे
अद्भुत जन - समूह दृग मीचे
ये योद्धा कहते तन देकर ध्वज की आन बचाओ।
सब मिल करके श्रद्धा और विनय से शीश झुकाओ ॥४॥

पंक्तिबद्ध यह दृश्य मनोहर,
युद्ध कवच शोभित छाती पर—
वीर शौर्यमय कितने चित्ताकर्षक हमे बताओ।
सब मिल करके श्रद्धा और विनय से शीश झुकाओ ॥५॥

मधुर तमिलभाषी नर योद्धा,
रक्तिम आँखो वाले क्षत्रिय
केरल वीर, मातृ पद सेवक—
तुलुभाषी, तैलंग युद्धप्रिय ॥६॥

यम को त्रास दिखानेवाले—
वीर मरहठे, रेड्डी-कन्नड ।
जिनकी देव प्रशसा करते—
वे हिन्दी - भाषी योद्धा गण ॥७॥

जब तक धरती, धर्म-युद्ध है,
हिन्द नारियो मे सतीत्व है ।
वे राजपूत अटल जिनकी इस—
भू पर तब तक अमर कीर्ति है ॥८॥

वीर सिन्धुवासी जिनको—
अभिमान 'पार्थ की भू पर रहते'
वंगनिवासी जो न भूलते—
माँ की सेवा मरते-मरते ॥९॥

ये सब देखो यहाँ खडे हैं ।
करके दृढ सकल्प अड़े हैं ।

इनकी शक्ति और सबसे पूजित ध्वज की जय गाओ ।
सब मिल करके श्रद्धा और विनय से शीश झुकाओ ॥१०॥

वर्तमान भारतीय

देख आज के जन की हालत, हृदय फटा जाता है।

भय के कारण दुनियाँ मे जीते-जो मरा करेंगे।
कोई ऐसी वस्तु नही जो देखे नही डरेंगे।
उनके लिए दम्भ, प्रतिकार, कपट के दैत्य खडे है।
इस तरुवर, उस तरुवर, उस खण्डहर मे छिपे पडे है॥
यही सोच करके मानव अब क्लात हुआ जाता है।
देख आज के जन की हालत, हृदय फटा जाता है॥१॥

तान्त्रिक का तो नाम मात्र सुनकर घबरा जायेंगे।
'ओझा' और 'मदारी' 'जादूगर' सुन थर्रायेंगे।
शक्ति हमारी ले हम पर ही शासन जो करते हैं।
मानव ऐसे राजनीतिज्ञो से भी अब डरते हैं।
उनको भूत समझकर जिनका खून सूख जाता है।
देख आज के जन की हालत, हृदय फटा जाता है॥२॥

देख सिपाही, चौकीदार, दिल धडक-धडक जायेंगे।
कोई ले बन्दूक चले तो घर मे छिप जायेंगे।
देखें यदि अति दूर सुसज्जित किसी व्यक्ति को आते।
भय के मारे हाथ जोडकर स्वय खडे हो जाते।
सबके आगे भीगी बिल्ली बन जाया करता है।
देख आज के जन की हालत, हृदय फटा जाता है॥३॥

फटता हृदय कहूँ क्या, हममे कितने भेद यही है।
एक कोटि यदि कहा जाय तो कुछ अत्युक्ति नही है।
पुत्र अगर कहता है, है नागेश पाँच सिरवाला।
और पिता कह दे छः सिर, भारी अन्तर कर डाला।
इतने अन्तर से ही उनमे वैर बढा जाता है।
देख आज के जन की हालत, हृदय फटा जाता है॥४॥

शास्त्र न पढ़ दंभी शास्त्री पिशाच का मत मानेंगे।
मन्तर पढ़ने पर स्वगोत्र को गाली दे डालेंगे।
दंभी, प्रपंची, कपटी की वे सेवा सब करते हैं।
मुख कंठ से करें प्रशंसा और नमन करते हैं।
व्यक्ति व्यक्ति वह शैव, अमुक वैष्णव कहता लड़ता है।
देख आज के जन की हालत, हृदय फटा जाता है ॥५॥

हृदय फटा जाता है पर मैं घृणा नहीं कर पाता।
हाय! अभागों को न अन्न, भर पेट कभी मिल पाता।
ये कारण जानने के लिए यत्न नहीं करते हैं।
जहाँ देखिए है अकाल, सब तड़प-तड़प मरते हैं।
उनके कष्ट-हरण का पथ ही दृष्टि नहीं आता है।
देख आज के जन की हालत, हृदय फटा जाता है ॥६॥

शक्ति नहीं चलने की ग्रस्त सदा रहते रोगों से।
पर के दिखाये पथ पर चलते शिशु से, अंधों से।
चार हजार करोड़ से अधिक रंग बिरंगी मधुर कलाएँ—
जनमी जिस भारत भू पर, जिन पर सब जग में गर्व मनायें।
उसमें व्यक्ति विवेकहीन पशु-सा जीवन जीता है।
देख आज के जन की हालत, हृदय फटा जाता है ॥७॥



आनेवाला भारत व जानेवाला भारत

जानेवाले भारत के प्रति कटुवचन

निर्बल कन्धोवाले भारत ! तू जा जा जा ।
दुर्बल मानसवाले भारत ! तू जा जा जा ।
हे कांतिरहित मुखवाले भारत ! तू जा जा जा ।
तू हो निस्तेज नेत्रवाले ! तू जा जा जा ।
कुंठित तेरा है कण्ठ हिन्द ! तू जा जा जा ।
है क्षीण तुम्हारी कांति हिन्द ! तू जा जा जा ।
तुम शकाकुल अन्तरवाले हो, जा जा जा ।
तुम सदा दासता के इच्छुक हो, जा जा जा ॥१॥

मान और अपमान शून्य कुत्ते के जैसा—
आज तुम्हारा जीवन भारत ! जा जा जा ।
भय के कारण कर न सको कृतज्ञता ज्ञापित—
चाटुकारिता करनेवाले जा जा जा ।
बीते जीवन के असत्य को सत्य मानकर
उसकी मुक्त प्रशसा करते जा जा जा ।
जगत् प्रसिद्ध सत्य को प्रबल असत्य बताकर
दुनियाँ के सम्मुख ला धरते, जा जा जा ॥२॥

दुनियाँ की अनगिन भाषाओ को सीखोगे—
किन्तु न सीखोगे निज भाषा, जा जा जा ।
पढ डालोगे ग्रन्थ सैकडो, किन्तु एक भी—
ग्रन्थ सत्यभाषी न पढोगे, जा जा जा ।
पाँच सैकडे मत-मतान्तरो की चर्चा मे—
सदा व्यस्त रक्खोगे निज को जा जा जा ।
तू असख्य दुर्गन्ध और कीचड ला लाकर
अपने घर मे भर डालोगे, जा जा जा ॥३॥

सैकडो जातियाँ कहनेवाले, जा जा जा ।
एक तू धर्म स्थापित न करोगे, जा जा जा ।

शास्त्र न पढ़, दम्भी शास्त्री पिशाच का मत मानेंगे।
अन्तर पड़ने पर स्वगोत्र को गाली दे डालेंगे।
छद्मी, प्रपंची, कपटी की वे सेवा तक करते हैं।
मुक्त कंठ से करें प्रशंसा और नमन करते हैं।
व्यक्ति व्यक्ति वह शैव, अमुक वैष्णव कहता लड़ता है।
देख आज के जन की हालत, हृदय फटा जाता है ॥५॥

हृदय फटा जाता है पर मैं घृणा नहीं कर पाता।
हाय! अभागों को न अन्न, भर पेट कभी मिल पाता।
ये कारण जानने के लिए यत्न नहीं करते हैं।
जहाँ देखिए है अकाल, सब तड़प-तड़प मरते हैं।
उनके कष्ट-हरण का पथ ही दृष्टि नहीं आता है।
देख आज के जन की हालत, हृदय फटा जाता है ॥६॥

शक्ति नहीं चलने की ग्रस्त सदा रहते रोगों से।
पर के दिखाये पथ पर चलते शिशु से, अंधों से।
चार हजार करोड़ से अधिक रंग बिरंगी मधुर कलाएँ—
जनमीं जिस भारत भू पर, जिन पर सब जग मे गर्व मनायें।
उसमें व्यक्ति विवेकहीन पशु-सा जीवन जीता है।
देख आज के जन की हालत, हृदय फटा जाता है॥

जयी हाथवाले भारत ! तू आ आ आ ।
विनययुक्त जिह्वावाले तू आ आ आ ।
पूरण ब्रह्म रूप भारत ! रे आ आ आ ।
निखिल पदार्थों के प्रतीक तू आ आ आ ।
प्राप्त ज्ञान के साथक कर्ता आ आ आ ।
मनानुकूल रूप निर्माता आ आ आ ।
अद्वितीय है कार्य देश को एक बनाना—
इसको सफल बनानेवाले आ आ आ ।।८।।



करके चर्चा सैकडो उचित आदर्शों की—
पैसे के कारण पाँव पडोगे, जा जा जा।
अत्याचारी बन नही डरोगे सम्मुख ही
अत्याचारी को देख भगोगे जा जा जा।
तुम ज्योतिर्मय माणिक्य के सदृश हो भारत—
पर समय चक्र मे धूल धूसरित, जा जा जा ॥४॥

आनेवाले भारत की प्रशस्ति

कांतियुक्त आँखोवाले आ आ आ।
भारत ! सुदृढ हृदयवाले तू आ आ आ।
अमृत के समान मृदुभाषी आ आ आ।
वज्र स्कधयुक्त भारत तू आ आ आ।
भारत परम शुद्ध मतिवाले आ आ आ।
देख नीचता खौल उठोगे आ आ आ।
पिघल उठोगे देख दीनता आ आ आ।
वृषभ चालवाले भारत तू आ आ आ ॥५॥

सत्ययुक्त ग्रन्थो को ही वेद मानकर—
उनकी स्तुति करते जाओगे आ आ आ।
तुम असत्य से डरनेवाले आ आ आ।
फेंकोगे अश्लील ग्रन्थ तू आ आ आ।
तुम शैथिल्य रहित चिन्तनमय ! आ आ आ।
हे आरोग्य तनवाले भारत आ आ आ।
इस धरती से दैव श्राप को दूर हटाकर—
अति उत्कृष्ट बनानेवाले आ आ आ ॥६॥

आओ अरे युवक भारत ! तू आ आ आ।
अद्वितीय बलशाली भारत ! आ आ आ।
यह निस्तेज देश है, इसम प्रात सूर्य सो—
प्रतिभा लकर ज्योतिर्मय तू आ आ आ
कातिरहित यह देश, अपरिमित रूप मे इसे—
कांतिदान करनेवाले तू आ आ आ।
पार्थ के सदृश, घटित सभी घटनाओ को निज—
नेत्रो मे दिखलानेवाले आ आ आ ॥७॥

जयी हाथवाले भारत ! तू आ आ आ।
विनययुक्त जिह्वावाले तू आ आ आ।
पूरण ब्रह्म रूप भारत ! रे आ आ आ।
निखिल पदार्थों के प्रतीक तू आ आ आ।
प्राप्त ज्ञान के सार्थक कर्ता आ आ आ।
मनोनुकूल रूप निर्माता आ आ आ।
अद्वितीय है कार्य देश को एक बनाना—
इसको सफल बनानेवाले आ आ आ ॥८॥



भारत समुदाय

रहो चिरंजीवि भारत समुदाय तुम्हारी जय हो, जय हो।
तीस कोटि जन का समान अधिकार यहाँ की सब संपत पर,
अद्वितीय यह रूप देश का होगा जग के रंगमच पर: तेरी जय हो।
रहो चिरंजीवि भारत समुदाय तुम्हारी जय हो, जय हो॥

मुंह का ग्रास छीनने का दिन अब भी क्या रह पायेगा?
कष्ट देखकर एक व्यक्ति का दूजा हर्ष मनायेगा?
सुभग वाटिका, हरे-भरे खेतो से भरा अपना—
क्या इसमे अब आगे भी कामुक जीवन रह जायेगा?
भरा हुआ है कोने-कोने मे अतुलित धन-धान्य यहाँ,
कंद मूल फल हमको यह देगा सदैव, देगा सदैव: तेरी जय हो।
रहो चिरंजीवि भारत समुदाय तुम्हारी जय हो, जय हो॥१॥

विनय दूसरे का न रहेगा।
अपना स्वयं विधान बनेगा।
तन मन धन से उसे देश का—
बच्चा - बच्चा वरण करेगा॥
क्षुधित दिख गया अगर कभी भी—
भारत भू का एक व्यक्ति भी—
हम विनष्ट कर देंगे, शाश्वत—
रह न सकेगा विश्व यह कभी: तेरी जय हो।
रहो चिरंजीवि भारत समुदाय तुम्हारी जय हो, जय हो॥२॥

गीता का - यह आप्त वचन—
जिससे प्लावित है जन-जन—
'जीवन सर्वभूतेषु'—
वासुदेव का सत्य कथन
व्यक्ति नही असमर्थ नितात—
सम्मुख जग के परम अशात—
रक्खेगा, हाँ हाँ, रक्खेगा—

हिन्द अमरता का सिद्धान्त तेरी जय हो।
रहो चिरजीवि भारत समुदाय तुम्हारी जय हो, जय हो ॥३॥

हम सब एक वश वाले है।
हम सब एक वश वाले हैं।
व्यक्ति-व्यक्ति मे भेद न कोई,
हम सब भारत के वासी हैं।
अतर नही मूल्य के स्तर में।
भाव न यहां सेव्य-सेवक के
सब स्वामी हां, सब स्वामी—
हां, सभी यहां स्वामी भारत के तेरी जय हो।
रहो चिरजीवि भारत समुदाय तुम्हारी जय हो, जय हो ॥४॥



स्वतंत्रता की चाह

जिनके उर मे चाह सदा अमृत पीने की,
वे मद पान भूलकर भी क्या कर पायेंगे ?
जिनके उर मे चाह शौर्यमय स्वतंत्रता की,
और न कुछ भी वे इस धरती पर चाहेगे ।

कीर्ति प्रदायक सद्धर्मों को सब कुछ मानें,
शेष सभी कुछ व्यर्थ यहाँ, ऐसा जो जानें ।
वे जन दासवृत्ति पर जीवन यापन क्यो करना चाहेगे?
जिनके उर मे चाह शौर्यमय स्वतत्रता की,
और न कुछ भी वे इस धरती पर चाहेगे ॥२॥

'जिसको जन्म मिला, मरना उसका निश्चित है'
जो इस अटल सत्य से जीवन मे परिचित है—
छोड धर्म को, मर्यादा को, आगे भी जीना चाहेगे ?
जिनके उर मे चाह शौर्यमय स्वतंत्रता की,
और न कुछ भी वे इस धरती पर चाहेगे ॥३॥

मानव जीवन पाना अति दुर्लभ इस भू पर
दृष्टि डाल पाये हैं जो इस परम सत्य पर ।
वे न कभी भी सत्य छोडकर, सत्यभ्रष्ट जीवन चाहेगे ।
जिनके उर मे चाह शौर्यमय स्वतत्रता की,
और न कुछ भी वे इस धरती पर चाहेगे ॥४॥

छोड निशा मे ज्योति-प्रदायक रजनीचर को—
कौनभला चाहेगा, टिमटिम जुगनूगण को ।
आंखो की पुतली स्वतंत्रता, छोड नही दासत्व करेंगे ।
जिनके उर मे चाह शौर्यमय स्वतंत्रता की,
और न कुछ भी वे इस धरती पर चाहेगे ॥५॥

रखकर चाह धरा के सुख की अपने मन मे,
स्वतंत्रता का गौरव क्या खोयेंगे जग मे ?

आँख वेचकर, चित्रों के क्रयकार हँसी के पात्र बनेंगे।
जिनके उर मे चाह शौर्यमय स्वतंत्रता की,
और न कुछ भी वे इस धरती पर चाहेंगे ॥६॥

कर लेंगे यदि नमन कभी वन्दे माँ कहकर,
माथ झुकेगा क्या मायावी असत् वस्तु पर?
'वन्दे मातरम्' एकमात्र उद्धारक यह भूल पायेंगे।
जिनके उर मे चाह शौर्यमय स्वतत्रता की,
और न कुछ भी वे इस धरती पर चाहेंगे ॥७॥

●

स्वतंत्रता का पौधा

नही नीर मे पाला-पोसा,
आँसों का जल देकर सींचा।
हे सर्वेश देख यह पौधा, मन पिघलेगा क्या ? ॥१॥

लाख भावनाएँ घृत बनकर—
विकसी प्राणों की अवनी पर
तल चिराग यह जला, मुझे स्वीकार करेंगे क्या ? ॥३॥

'सत्यमेव,'जयते' सद्जन का—
वचन झूठ हम होने दें क्या ?
कृत का फल भोगा जो, यह पर्याप्त नहीं है क्या ? ॥३॥

श्रममय वर्ष सहस्र बिताये—
खोई मणि अपने घर लाये।
फिर उसको हम किसी मूल्य पर खो सकते हैं क्या ? ॥४॥

कारागृह में चुप पड़े-पड़े,
सज्जन घुट-घुट रात-दिन मरे
मेधावी पिसते कोल्हू में दृष्टि न आये क्या ? ॥५॥

पीड़ा में मसोसते मन को—
अनगिन सद्चरित्र, सज्जन को,
अंधे शिशु सा व्यथित तड़पते देख न पाये क्या ? ॥६॥

रौंद मनोबल नवयुवकों के—
बिलग मातु पितु जन से करते,
यह अनीति की पराकाष्ठा देख सकोगे क्या ? ॥७॥

तव प्रदत्त सब देन प्रकृति की
हे प्रभु ! मिट जायेगी फिर भी—
पीड़ाएँ अतिरिक्त तुम्हारे अन्य हरेगा क्या ? ॥८॥

हुई तुम्हारी कृपाकांक्षा
मिली हमें प्यारी स्वतंत्रता।
करें अपहरण उसका निर्दय पशु, देखोगे क्या ? ॥६॥

हम न अगर स्वाधीन बनेंगे—
तो क्या अतिशय दीन बनेंगे ?
बिना गगन वर्षा के जन-जीवन संभव है क्या ? ॥१०॥

मन में इच्छाएं उभरेंगी—
तेरे बिना न पूरी होंगी।
छल पाखंड रहित हम सबके उर निरखोगे क्या ? ॥११॥

क्या हम व्यर्थ पुकार रहे है ?
तन मन धन सब वार रहे है ?
हम सबका विलाप, यह तड़पन व्यर्थ रहेगी क्या ? ॥१२॥

सब हित तेरी अनुकम्पा से—
तेरा हक मांगे दुनियाँ से।
हम पर द्रवित तुम्हारा होना, उचित नहीं है क्या ? ॥१३॥

जो करते प्रार्थना तुम्हारी,
नई नही यह विनय हमारी,
नही पूर्वजो के सुखमय दिन याद करोगे क्या ? ॥१४॥

अगर धरा पर धर्म सत्य है,
तव अस्तित्व अचल शाश्वत है।
तो हम दुनियाँ की इच्छाएँ पूर्ण करोगे क्या ? ॥१५॥

●



स्वतन्त्रता की प्यास

प्यास बुझेगी कब अन्तर से स्वतत्रता की ?
पराधीनता के कब तक व्यामोह मिटेंगे ?
कब तक टूटेंगी भारत माँ की हथकड़ियाँ ?
अब के उत्पीडन कब बीते स्वप्न बनेंगे ?

आर्यजनो के जीवन रक्षक एकमात्र प्रभु
सत्य विजय के लिए महाभारत मे आये।
रक्षा, विजय हमारी सब तेरे हाथो मे—
क्या यह उचित कि भक्त तुम्हारा कष्ट उठाये ।।१।।

भुखमरी, पीडा क्या तेरे भक्तो को ही,
उन्नत जीवन शेष सभी दुनियाँवालो को ?
अनुचित किया नही क्या अब तक छोड निराश्रित-
अति पीडित, हम आश्रय मे आनेवालो को ?

ठुकरा सकती है क्या माता अपने शिशु को—
अभय दान करना तेरा कर्तव्य नही है ?
भूल गये क्या धर्म, कुकर्मी असुर सहारक।
वीर शिखामणि और आर्य उत्तम तू ही है ।।२।।

●

स्वतंत्रता की स्तुति

छोड भवन सुखमय, कठोरतम—
कारावास भुगतने पर भी।
खोकर यश, ऐश्वर्य, घृणा—
निन्दा का पात्र बनूं मैं तब भी।
कोटि कष्ट सहते-सहते ही—
मैं विनष्ट हो जाऊँ फिर भी—
हे स्वतन्त्रते! भूल न सकता—
नमस्कार करना तुम्हे कभी ॥१॥

कृपापात्र जो नही तुम्हारा—
अद्वितीय धनवान क्यो न हो।
विद्या बुद्धि समन्वित नाना—
शास्त्रज्ञान मे दक्ष क्यो न हो।
अगणित महिमा लिए हुए वह—
मानव अति महान् हो फिर भी
उसका जीवन उस शव सा—
जो सुन्दर आभूषण पहने हो ॥२॥

वह भी कोई देश, जहाँ पर—
दिव्य ज्योति तेरी पडी नही
जीवन और विवेक बुद्धियुत
सृजनात्मक क्षमता वहाँ कही ?
उत्तम काव्य, कलाएँ और—
वेद शास्त्रो का सृजन न होगा—
पापी है जिसको रक्षाहित
तेरी कृपा कभी मिली नही ॥३॥

सदा मरेंगे व्यथित, राग से—
मन मे नही उमग रहेगी।
तुच्छ वन्य पशुओं से बढकर
नीची उनकी वृत्ति रहेगी।

स्वतन्त्रता की प्यास

प्यास बुझेगी कब अन्तर से स्वतंत्रता की ?
पराधीनता के कब तक व्यामोह मिटेंगे ?
कब तक टूटेंगी भारत माँ की हथकड़ियाँ ?
अब के उत्पीड़न कब बीते स्वप्न बनेंगे ?

आर्यजनों के जीवन रक्षक एकमात्र प्रभु
सत्य विजय के लिए महाभारत में आये।
रक्षा, विजय हमारी सब तेरे हाथों में—
क्या यह उचित कि भक्त तुम्हारा कष्ट उठाये ॥१॥

भुखमरी, पीड़ा क्या तेरे भक्तों को हो,
उन्नत जीवन शेष सभी दुनियांवालों को ?
अनुचित किया नहीं क्या अब तक छोड़ निराश्रित-
अति पीड़ित, हम आश्रय में आनेवालों को ?

ठुकरा सकती है क्या माता अपने शिशु को—
अभय दान करना तेरा कर्तव्य नहीं है ?
भूल गये क्या धर्म, कुकर्मी असुर संहारक।
वीर शिखामणि और आर्य उत्तम तू ही है ॥२॥



स्वतंत्रता की स्तुति

छोड़ भवन सुखमय, कठोरतम—
कारावास भुगतने पर भी।
खोकर यश, ऐश्वर्य, घृणा—
निन्दा का पात्र बनूं मैं तब भी।
कोटि कष्ट सहते-सहते ही—
मैं विनष्ट हो जाऊँ फिर भी—
हे स्वतन्त्रते ! भूल न सकता—
नमस्कार करना तुम्हे कभी ॥१॥

कृपापात्र जो नही तुम्हारा—
अद्वितीय धनवान क्यो न हो।
विद्या बुद्धि समन्वित नाना—
शास्त्रज्ञान मे दक्ष क्यो न हो।
अगणित महिमा लिए हुए वह—
मानव अति महान् हो फिर भी
उसका जीवन उस शव सा—
जो सुन्दर आभूषण पहने हो ॥२॥

वह भी कोई देश, जहाँ पर—
दिव्य ज्योति तेरी पडी नही
जीवन और विवेक बुद्धियुत
सृजनात्मक क्षमता वहाँ कही ?
उत्तम काव्य, कलाएँ और—
वेद शास्त्रो का सृजन न होगा—
पापी है जिसको रक्षाहित
तेरी कृपा कभी मिली नही ॥३॥

सदा मरेंगे व्यथित, राग से—
मन मे नही उमग रहेगी।
तुच्छ वन्य पशुओ से बढकर
नीची उनकी वृत्ति रहेगी।

अनुभव कभी अमर सुख का
न करेंगे, सुख न स्वप्न मे होगा—
गौरव अमिट प्रदायिनि माँ !
जिनको न तुम्हारी कृपा मिलेगी ॥४॥

यदि मिले बन्दीगृह भी उसे—
स्वर्ग तुल्य हुआ करता सदा ।
तव कृपा के लिए देवी नित्य ही—
मुदित मन सर्वस्व अर्पण जो करे ॥५॥

विश्व सुखपूरित महल, अट्टालिका,
विषम कारागृह सरीखो है उसे ।
माँ! तुम्हारी जो न महिमा जानता—
दासता मे मन लगाता है सदा ॥६॥

नई शक्ति पाश्चात्य देशो को मिली—
शौर्यमय जयकार तेरी जो किए ।
कह उठे तन कोटि दे यमराज को—
हम तुम्हारी कृपा से लेंगे सदा ॥७॥

कीर्ति की स्तुति मे तुम्हारी विनय में—
गा सकूं क्या दास मै, असमर्थ हूँ ।
छिन्न गौरव, पतन को है प्राप्त जो—
अहो ! मैं उस देश मे पैदा हुआ ॥८॥

देवि हे ! सद्धर्म की सरक्षिका—
री विदारिणी, कष्ट, दुख, रोगादि को ।
ज्योति ! मंगलमय सुधा !! नर शूर की—
मैं सदा ही स्मरण रक्खूंगा तुझे ॥९॥



स्वतंत्रता

स्वतत्रता स्वतत्रता स्वतत्रता
है स्वतत्रता भगी और चर्मकारो को ।
है स्वतत्रता आदिवासियो, बजारो को ॥
क्षमता के अनुकूल सभी उद्योग चलायें ।
उच्च ज्ञान, शिक्षा पा जीवन सुखद बनाएँ ।
सबको मिलो देश मे आज स्वतत्रता ॥
स्वतत्रता स्वतत्रता स्वतत्रता ॥१॥

वृहद् जाति मे नही अकिंचन, दास न कोई ।
अब भारत में नीच व्यक्ति का नाम न कोई ॥
शिक्षित हो, समुचित धन धान्य सभी जन पायें ।
आपस में हिलमिल समता का समय बिताएँ ।
सबको मिलो देश में आज स्वतत्रता ॥
स्वतत्रता स्वतत्रता स्वतत्रता ॥२॥

जिससे जन नर से नारी को नीचा जाने ।
हम अपनी वह अज्ञानता दूर कर डालें ॥
तोड दासता को जीवन को सुखी बनावें ।
'नर नारी समान है' यह सद्भव जगावें ।
सबको मिली देश में आज स्वतत्रता ॥
स्वतत्रता स्वतत्रता स्वतत्रता ॥३॥

नाचेंगे हम

नाचेंगे हम आनन्द मगन हो नाचेंगे,
आनन्द स्वराज मिला हमको, हम नाचेंगे।
नाचेंगे हम आनन्द मगन हो नाचेंगे ॥

दिन बीत गया है, ब्राह्मण को प्रभु कहने का,
गोरे फिरंगियो को हुजूर भी कहने का।
हमसे करके याचना हमारे ऊपर ही—
शासन करनेवालो की सेवा करने का॥
जिसने हमको अब तक अँधियारे मे रखा,
उस दगाबाज अन्यायी का दिन बीत गया, हम नाचेंगे॥
नाचेंगे हम आनन्द मगन हो नाचेंगे ॥१॥

सर्वत्र यही चर्चा है अब हम है स्वतन्त्र,
हर कंठ यही गाता है अब हम हैं स्वतन्त्र।
हैं निर्विवाद भारत भू के जन-जन समान—
क्या ऊँच-नीच सब कहते हैं हम सब स्वतन्त्र॥
हम शख फूंककर जय जयध्वनि उच्चारेंगे—
धरणी के कोने-कोने मे रव गूँजेगा— हम नाचेंगे।
नाचेंगे हम आनन्द मगन हो नाचेंगे ॥२॥

आया रे! दिन जब सब समान बन जायेंगे।
इस भू से जब छल दभ स्वय मिट जायेंगे।
उच्चता नीचता का पैमाना बदल गया—
सद्धर्मी, सत्कर्मी महान् कहलायेंगे॥
जायेंगे अपने आप यहाँ से पाखडी—
वंचक विनष्ट हो जायें वह दिन आया है, हम नाचेंगे।
नाचेंगे हम आनन्द मगन हो नाचेंगे ॥३॥

हम मुक्त कंठ से कृषि के वन्दन गायेंगे।
उद्योगों के मस्तक पर तिलक लगायेंगे।

भक्षण करके भरपेट व्यर्थ जो रहते हैं—
उनको हम शब्द भर्त्सना भरे सुनायेंगे॥
ऊसर धरती में जल सिंचन से क्या होगा—
कोई न व्यर्थ कर्मों में समय गवायेगा, हम नाचेंगे।
नाचेंगे हम आनन्द मगन हो नाचेंगे ॥४॥

अपना ही है यह देश हुआ है भास हमे,
अपना इस पर अधिकार हुआ है भास हमे।
परिपूर्ण ब्रह्म की सत्ता के अतिरिक्त किसी—
सत्ता पर होगा कभी नही विश्वास हमे॥
दासता उसी की केवल कर सकते हैं हमे—
दूसरा हमे परतन्त्र न रखने पायेगा—हम नाचेंगे।
नाचेंगे हम आनन्द मगन हो नाचेंगे ॥५॥

●

नाचेंगे हम

नाचेंगे हम आनन्द मगन हो नाचेंगे,
आनन्द स्वराज मिला हमको, हम नाचेंगे।
नाचेंगे हम आनन्द मगन हो नाचेंगे ॥

दिन बीत गया है, ब्राह्मण को प्रभु कहने का,
गोरे फिरगियो को हुजूर भी कहने का।
हमसे करके याचना हमारे ऊपर ही—
शासन करनेवालो की सेवा करने का ॥
जिसने हमको अब तक अँधियारे मे रखा,
उस दगाबाज अन्यायी का दिन बीत गया, हम नाचेंगे ॥
नाचेंगे हम आनन्द मगन हो नाचेंगे ॥१॥

सर्वत्र यही चर्चा है अब हम हैं स्वतन्त्र,
हर कठ यही गाता है अब हम हैं स्वतन्त्र।
हैं निर्विवाद भारत भू के जन-जन समान—
क्या ऊँच-नीच सब कहते हैं हम सब स्वतन्त्र ॥
हम शख फूँककर जय जयध्वनि उच्चारेंगे—
धरणी के कोने-कोने मे रव गूँजेगा— हम नाचेंगे।
नाचेंगे हम आनन्द मगन हो नाचेंगे ॥२॥

आया रे! दिन जब सब समान बन जायेंगे।
इस भू से जब छल दभ स्वय मिट जायेंगे।
उच्चता नीचता का पैमाना बदल गया—
सद्धर्मी, सद्कर्मी महान् कहलायेंगे ॥
जायेंगे अपने आप यहाँ से पाखडी—
वचक विनष्ट हो जायें वह दिन आया है, हम नाचेंगे।
नाचेंगे हम आनन्द मगन हो नाचेंगे ॥३॥

हम मुक्त कठ से कृषि के वन्दन गायेंगे।
उद्योगो के मस्तक पर तिलक लगायेंगे।

भक्षण करके भरपेट व्यर्थ जो रहते हैं—
उनको हम शब्द भर्त्सना भरे सुनायेंगे ॥
ऊसर धरती में जल सिंचन से क्या होगा—
कोई न व्यर्थ कर्मों में समय गवायेगा हम नाचेंगे।
नाचेंगे हम आनन्द मगन हो नाचेंगे ॥४॥

अपना ही है यह देश हुआ है भास हमें,
अपना इस पर अधिकार हुआ है भास हमें।
परिपूर्ण ब्रह्म की सत्ता के अतिरिक्त किसी—
सत्ता पर होगा कभी नहीं विश्वास हमें ॥
दासता उसी की केवल कर सकते हैं हम—
दूसरा हमें परतन्त्र न रखने पायेगा—हम नाचेंगे।
नाचेंगे हम आनन्द मगन हो नाचेंगे ॥५॥

तानाशाह जार का पतन

महाकालि की, पराशक्ति की, यहाँ कृपा की दृष्टि हुई है।
देखो देखो, रूस देश मे एक महा युगक्राति हुई है।
देख अन्त अत्याचारी का, है प्रसन्न अत्यधिक देवगण।
यह नवीनता देखे दुनियाँ, देख जिसे मरते पिशाचगण ॥१॥

अन्यायी हिरण्य सा क्रूर जार ने अपना राज्य किया था,
उस शासन मे सद्धर्मी, सज्जन, अनाथ बन तडप रहा था,
महामूढ था, मान लिया था धर्मतुच्छ, उसके शासन मे—
मूल पाखड भरे थे जैसे सर्प भरे होते हैं वन मे ॥२॥

अभी किसानो को न अन्न था, बस बीमारियो का स्वराज था।
जो असत्य के आश्रय मे थे, उनके घर ऐश्वर्य भरा था।
फाँसी थी आसान, सत्यवादी को बन्दीगृह की पीडा।
साइबेरिया के वन मे थी मृत्यु बुलाती करती क्रीडा ॥३॥

हाँ, बोले तो कारावास, मिले बनवास अगर क्यो पूछे।
लुप्त हुआ सद्धर्म, अधर्म धर्म था नीच जार के नीचे।
पिघला उर माँ का निकाल मे, सत्य सघ भक्तो की पालक—
कृपादृष्टि फेरी अपनी, यम जार महापापी कुल-घातक ॥४॥

गिरा जार-शासन, जैसे हिमालय गिरे धरा पर।
धर्मविनाशक असत् वचन से, एक एक कर मिटे समय पर।
झझा के झोको मे जैसे वृक्ष टूट ईधन बन जाते।
दुनियाँ ने देखा वैसे, अधर्मियो को विनष्ट हो जाते ॥५॥

देखो यह जनतन्त्र, एक सा न्याय सभी को यहाँ मिला है।
जन शासन है, पनप न सकती दासवृत्ति, उद्घोष हुआ है।
गिरा हुआ कलिकाल, गिरी दीवार, यहाँ ज्यो ठोकर खाकर।
खडा हो रहा है *कृतयुग* देखो उसकी टूटी *काया* पर ॥६॥

गन्ने के खेत में

गन्ने के खेत, हाँ गन्ने के खेत में।
थके हाथ-पैर इधर-उधर लुढक जाती है,
पछताती हाय-हाय करती चिल्लाती है।
हिन्दू महिलाओ का खून उबल जाता है—
पीडा मे आठ-आठ आँसू ढुलकाती है॥
इनकी इस पीडा को दवा ही नही क्या ?
पिसती है रात-दिन कोल्हू के बैल सी : गन्ने के खेत में।
गन्ने के खेत, हाँ गन्ने के खेत मे ॥१॥

होता ऐसा प्रभाव नारी के नाम का
पिघल-पिघल जाता है अतर शैतान का।
पर यह भी होगा क्या नारी के कष्ट देख—
द्रवित नही होगा अतर्मन भगवान् का ?
अश्रु बहाते वे क्या मिट्टी मे समा जायेंगी
दक्षिण सागर मध्य शेप समय खोयेंगी
तडप रही है बहनें अधे वन, द्वीपो मे : गन्ने के खेत मे।
गन्ने के खेत, हाँ गन्ने के खेत मे ॥२॥

कब वे इस धरती की सुधि करने पायेंगी ?
कब तक निज भारत के दर्शन को आयेंगी ?
मातृ-भूमि का उनको ध्यान तक नही होगा,
तुमने तो पवन ! आर्तनाद भी सुना होगा ?
कहो एक बार जो कहा है तुमसे सबने,
दुख सागर मे क्या उत्पीडन सहती बहनें ?
फूट-फूट रोने को शक्ति भी नही है अब : गन्ने के खेत मे।
गन्ने के खेत, हाँ गन्ने के खेत मे ॥३॥

अन्यायी उत्पीडन देते ही रहते हैं,
बहनों को त्रास दे सतीत्व भग करते हैं।
बेचारी अबलाएँ तडप-तडप रहती हैं—
शोषण की ज्वाला मे घुट-घुटकर मरती हैं॥

क्या ये शोषण, पीडन, प्रोत्साहन पायेंगे ?
क्या अब ये आगे भी सहन किए जायेंगे ?
आओ तुम हे कराल ! चण्डी !! दुर्गे !! विशाल .
गन्ने के खेत मे ,
गन्ने के खेत, हां, गन्ने के खेत मे ॥४॥



बेल्जियम् की स्तुति

धर्म पर अपने सदा तू अटल था,
धम के कारण पतन तेरा हुआ।
सहन अत्याचार सब कर लिया जो
शक्तिशाली विदेशी देते रहे।
सूप से जिसने भगाया व्याघ्र को—
अति बली उस आदिवासिनी की तरह।
साधनों से दीन होते हुए भी—
विश्व में कृतकर्म से ऊँचे बने ॥१॥

पतन तेरा हुआ बस औदार्य से,
शत्रु सेना सिन्धु सी, दृढ शक्तियुत,
आक्रमण को बढ़ी भी उस समय भी—
रंच मात्र न धैर्य तेरा डिग सका।
वीरता से प्राप्त करना प्रशंसा—
उचित है, यह मान, मन दृढ कर लिया।
अटल थे अधिकार के रक्षार्थ तुम—
सत्य पर मर मिटे जो, उस देश के ॥२॥

स्वाभिमानी था, पतन तेरा हुआ,
शत्रु शासक नीच, गर्वित शक्ति पर,
अति बलिष्ट रहा तथापि अभाव मे—
शक्ति के भी, रंच मात्र न डरा तू।
नाम मुड़ने का न पीछे लिया तू।
यथाशक्ति किया करेंगे सामना
कहा, और बलिष्ठ रिपु के मार्ग मे—
तू सदा रोड़े बढाता ही रहा ॥३॥

वीरता से ही पतन तेरा हुआ—
पिल पड़ी जब शत्रु सैन्य पहाड़ सी।
छिप रहे रक्षार्थ अपने मात्र ही—
हृदय ने तेरे न स्वीकारा कभी ॥

सर्प को ज्यो तुच्छ कीडा मान ले ,
निपट लघु कर लिया इस सघर्ष को ।
वढ रही उस शत्रु सेना का प्रबल ,
सामना अत्यन्त दृढता से किया ॥४॥

पतन अगम, अटूट साहस मे हुआ,
शत्रु की सेना अपरिमित शक्ति मे—
अहकारो उगलती आग को—
देश के सीमान्त पर चढ आ गई ॥
उस समय भी वचन पर निज दृढ रहे,
शरण मे जाना न स्वीकारा कभी—
पराजय तुम मान सकते थे नही—
टोकते ही रहे अरि दल को सदा ॥५॥

भय न पास कभी फटकने दिया तू
तुच्छ समझ घोरतम आपत्ति को ।
अति तरगाकुल नदी की बाढ सी—
वाहिनी लेकर सबल, अनगिनत जव—
शत्रु शासन भयकर अति दैत्य सा
पिशाची बलयुक्त घुसने लगा था—
'जान जाने पर न आन गँवायेंगे'
बोलकर हर बार तू भिडता रहा ॥६॥

किसी कारण से बढो हो शत्रुता ,
प्रकट होती हो किसी भी रूप मे
देश की सीमा हमारी जब कभी—
बिना अनुमति शत्रु कोई लाँघता,
और घापित युद्ध करता देश मे
चरण धर दे, गर्व, उसका चूरकर—
कर समूल विनष्ट दम लेंगे, यही
गर्जना करता डटा हो तू रहा ॥७॥

यज्ञ मे आहुत हुआ वलि पशु सदा—
पुन उत्तम जन्म पाता है यही

वेद का यह वाक्य है उस तरह ही
देश हित आहुत हुए हो तुम बली।
तुम पराजित हुए, किन्तु अवश्य ही
क्रान्ति एक महान् होगी देश मे—
क्षणिक अवनति प्राप्त तेरा यश पुन
पूर्णत उत्थान पायेगा कभी ॥८॥

मन्द होती ज्योति दीपित दीप की
जब दिवाकर उदित होता पूर्व से
स्वर्ण का भी महल अक्षुण्ण है नही—
नष्ट होता है समय के चक्र मे॥
तू नही भयभीत होता है कभी,
शत्रु के अत्यधिक अत्याचार से
दृढ प्रकृति औ सजग मिटने को सदा
विघ्न वाधाएँ उसे क्या करगी ॥९॥